



५४२:वे८४:५८:यॅ४:५०:ग्रद्धः ५००

first Edition 500 copies

ही ज्या २००२ स्राह्म ने १९०१

copyright © Gelugpa Students' Welfare Committee, 200%

Published by:

Gelugpa Students' Welfare Committee Central Institute of Higher Tibetan Studies Sarnath,221007, Varanasi, India

Printed at: Surabhi Printers, Maldaiya, Varanasi

५गाम:ळग

			~
GNE.	, ,	म व्यास्त्र स्टब्स	विवाःग्रह्य
л,		यर.पश्चिष्याचन्द्र <u>।</u>	I - III
d,		^{ॣॖॺ} ऄॗय़ॺॱॾॖ॓ॱय़देॱळेबॱश्रुटॱय़ॕॗढ़॓ॱॺॄॺटॱय़ढ़ॱॾॺॱॿ <i>ॸ</i> ।	1-33
4 J.		વાઢા'નાર્કેવે'ફ્ર'¤ા	76-72
۲.		चार्थात्रास्चाः हूँचे तपुः हूँचे तपु्री	71-77
4.		८८.त्र.पक्षंत्र.पक्ष्य.पक्षा.ता.वा.वर्षेत्र.त्र.ता.वा.वर्	
		यःवा	
	ŋ	अर्केन्यरवर्हेन्या	Ϡ ୯-Ϡጎ
	7	કેંશ .ন×.২েপ.বেওব.বে	30.00
	3	४४.तर.चर्र्येज.च।	०५ - ०७
₩.		विश्वभाषायक्ष्व पर्देश क्षेत्रे जुवादिक्ष प्रमुद्देश प्	
		देशःववृदःचन्दःयःवा	
	9	ट्रमायवुद्यास्त्रीत्रप्रमायवे कुःसळम्।	621-64
	3	द्रषायवृद्दावश्चेदायवे स्वायम् पायाविषायषाद्रदार्यः	en-44
		कु.पट्रंतु.श्रॅट.चंशर्कूचा.क्वैजा	
	3	ब्रिश्रतः द्वी.श्रद्धः श्रैटः चथा कूवा क्वी	47-60
	9	देशवर्वुदाने विश्वेदायंदे स्वत्।	હય - હહ
₹.		चैर.क्वेत.ग्री.श्रश्रश्रय.चर्चर.त.जो	

	٣	શ્રેશ્વન, ત્રુંથે ર.તતુ. ર્થુળ	৬ - গ্র
	N.	श्रेश्रश्चे र प्रक्षेत्र प्रवे स्वर्।	ام لد
8.		लट.रेबे.तपु.के.य.वचेर.त.जो	
	ŋ	র্জ, ব. বর্ষুপ, বনুর, ক্রী, প্রত্মপু	10-16
	1	क्ष.च.बाह्रब.ज.उचेच.क्युंवा	44 · <i>09</i>
	٦	ङ्ग'पवे'र्पुर'य' अ ॱहेंग्ब्र'यवे'ळर्।	13
	9	ৼৢ'पवे''५५५'य'ॡॕঀয়'यवे'ळ५।	13.16
	ય	য় ঀ৻৻৴য়ৣ৴৴য়ৢয়৾৴৻য়৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸	ሰ ብ - ካል
5.		देशयःक्षेत्रक्षःक्षुत्ययःयःवसुव्यत्तरःवत्स्रस्यः।	<i>(</i> ነፋ - 100
Ħ.		न्यसुस्रायायम्द्रायासहराद्वेत्रायासह्याची गुःच।	909-906
5.		<u> ব্রুহ স্ট্রুব</u> ক্টব্য	902 - 90 <i>p</i>

७ थ - ७ ५

मुश्रमायभुदि-देम्बारायुःक्रीश्रम्बरी

9

र्पर पश्चित्रगण्यम्

त्युन्चर्द्रमाक्त्रियानुवर्द्वर्द्वर्द्वर्द्वर्द्वर्द्वरायाम्बर्द्वर्द्वर्द्वर्द्वर्द्वर्द्वर्द्वर्

जीट मुक्का स्था दिव स्थित पर्देश पर्द्ध विषया मुह्न द पावी वाया मुख्य पर्द्ध प्राप्त प्रवी र सुष्टे प्राप्त प्र

ट्रेंद्र-स्ट्रिय र में यो र सिंह मीय इस संग्री समासिर सम्द्रिय र में र मी मिल है .

जायर जूर ज़ी श्रोधका चीर इशासका इशासका देश स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्व

यदेव ही र यह श्रामिट मूर्यातात्तर भरता हेर बट क्रूबा तार्ट मुखार्यू र राय क्रूबा था इंग्य ट श्रुब विवा हे.

रवायमः स्टायेमावीर त्याच्याचीमार्ग्याचीमार्ग्याचीमार्ग्याचीमार्ग्याचीमार्ग्याचीमार्ग्याचीमार्ग्याचीमार्ग्याचीमा

र्ट्र, क्रीकुराशक्तुर, व्रिट्य र वो दंख, ही जया विट खया की ट क्रूडिंग हुंच विषेत्र कर हुंच विषय है। बट.

ऱ्यः द्रवात्तर ऱ्यं विषर ऋषः अष्णतात्रावृत्वाषर क्रद्यद्रद्रत्ये कृषर् द्रवीषाः ग्रीः सवीद्याद्ये स्त्रकृतीषः

८तर वर्षिय विष्टर विश्वेषा ग्रीम के कुछ ग्रुचां तात्र में शत्त्र देशूटमाता हूर्चामात्र में शट्यां राक्ट्रमा

कैजात्त्रहूट वित्राक्रयंत्रुप्रविशेट जियाविह्यस्याविश्वर्ये विविश्वरात्रे स्नेट ग्री जिवेजाय कश्चित्रवाई स्त

्ट्रायातात्वर, कुष्य, कुर्द्वानूर्य की स्त्रेर ने अक्ष्य येथा कुष्य में तर्देष विश्वश्वाता वर्षयं तर्ह्य तर्ह्य तर्ह्य त्राश.

यहे सुरू र में कि से ही जाता सैना सूर्य दुवा राष्ट्र र तर में में यू विर ता सी विश्व सी से स्था हुन ही.

शर्वेष.कु.रिचाताम.श्रा.रेशव रश्याचीय.विवारी ताचीया

च इराय ग्राट नुषाने आर मुज्य के जी जात का की या जी प्राप्त की सुष्ता आर आनु मुज्य रहेट ।

तर पश्चित्र योशवायम् ।

भैतरायर्ट्र राद्रावाक्रमास्त्रिर्ट्रामस्त्रिर्वे ने सह्त्रायम् राद्र्यायम् राद्र्यायम् राद्र्यायम्

चनिष्ठेषायम् न्वाचेरः सन् नुःसहन् यंदेशहेर् स्वायां गुःवाबुदः स्रम्यां सेषुवायुत्रः देदः वार्ष्यायः प्र ने प्रह्म क्षेत्र प्रति क्षुळे पहन केट मुन्न का ग्री प्रवेत क्षेत्र मुक्त मुक्त प्रवाप प्रवेत के का ग्री

देथ ता वर दुषा ता की र ही भारती ता के भारत की मान कर है मान है से प्रति मान की मान की मान की मान की मान की मान कैजायास्रमायरमाग्रीःस्रिषःस्रमातुःपाद्रमा क्रायमार्थमाद्रपाद्रमात्रीयःग्रीमायर्थःस्रमायदेवः

ष्याङ्गिरःक्वितान्तुःन्रहेत्रःतानुष्यानुष्यन्त्रेत्रः हिविषानुषान्त्रवानुष्यः स्वत्यानुष्यः निष्यः निष्यः

तमार्थनमञ्जू स्त्रात्मा के स्त्री के स्त

उत्तर्भात्रम्भायाः वारःसमायायातःद्रम्भस्तायात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम् ट्ये.च्यु.चन्यायोश्य अक्ष्यं यं या हैंसायं ट्ये.हृस् किताशक्ष्यं अक्रूया यो यो ह्या आ की प्राप्त अव क्रु.

र्वेक्यक्रियक्षिया र्वेक्यो र्वेक्यक्षिया देवेक्यक्षिया है

र्पायहूर्वितार्थस्य विष्यत्तर्भरत्यः विष्यत्त्रम्यम् अपूर्वित्रम्यम् विष्यत्त्रम्यम् विष्यत्त्रम् ८.५४.६वीर्त्रुर्ध्रेर्द्रवाचारस्य ०० वसायरत्र रे.वर्ष्मेयत्रुर्के वर्षेट्र वायवातीयाविश्व थर र्ट्यूब की चौर को हुर हीय यहेब र ही वा चारेबा र व्यूका रेटा र वे स्था हुर हो वा चरेबा हो वा

क्षेत्रकृतिः क्ष्यां वीयत्षयासुर यार्देष स्थायामा वार्या विद्या स्थायास्य वार्या विद्या स्थायास्य त्रमान्य त्रमाक्रमाविर दे त्रस्योकात्रातूर त्रात्यार दूषायीयात्राचात्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त २.चर.त्रिवोद्रात्रे,श्रेर द्रच्याविवालासीश्रह्ण की कूर्य तार्वाञ्चवाता ही कूर १५५ एक हुत्वाला स्राप्त है.

कि.शक्त्राकृत्वां, व्राथा शह्र देत्यावित्र राज्यावित्र वित्रात्वाक्त्रात्त्र वित्रात्वाच्यात्र वित्रात्वाच्या

रतर.पश्चिष.वोशज.चसरी Ш

र्याद्धर्यायायादादेवः विवादास्या देन्त्वेव नह्यायान्यास्य तर तिवा रूर्वाय विषय क्रिया ग्रीट र्डेक्य जय होट स्वीवनय नया क्या जवाय हारा

सू.चेश्चां तर्राष्ट्रचीमाश्चास्य चारा श्रवास स्तिष सुर अप योग्यास्य स्ति या स्ति या स्ति या स्ति या स्ति या स्

ज्यान्य मार्च्यान्य प्रमाना निष्या मार्च्यान्य मार्य मार्च्यान्य मार्च्यान्य मार्च्यान्य मार्च्यान्य मार्च्यान्य मार्च्यान्य मार्च्यान्य मार्च्यान्य मार्च्याय मार्याच मार्याय मार

त्यु.रश्यायन्यांथायोषटःशायवःकूथानूचिषाक्षरःश्ररःयङ्गीषायाङ्ग्रीः विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे

वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः वायाः वायाः

वा. श्रान्त्रश्रम द्रुत्र ह्वाकाना संयुष्णाना हेन्द्रन क्ष्या अन वान स्वमान निवास

. की.प्यार च्रिंग रूचा सेवा रेत रेपुर प्रम्य स्थाप का हू वीय रो अहूर क्षेत्र में स्वरं ये या प्रहे वी सिया प्र

ाजि । त्याप्रद्रेष विशेषार्द्ध कु. क्षर्युः स्थावियायन विद्वेद्द अकर त्यूयर विराध स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप वाशर त्युर मेश्रात्र स्वर तात्रा तर्हून किर वार्षुकात्र ग्रहेतकात्र न वार्षेकाश्रह्म ने वार केश्रात्र प्रत रगरक्षरेयमेश्वराद्यायव्यवर्गेषा ॥

<u>জ্ঞা ।প্লুফ্রা</u>ষ্ট্রা अक्षक्षेत्रः अविधिते व प्रमुदः श्रुव्या कि ब्रेन्यमञ्जन्यम्बर्ग्यम् व्यक्षित्रक्षर्थः हेर्द्धवृद्धवाय्वरः चनुस्यक्ष्यरा द्रवाशतम्बुद्धावितःयर्वायर्वे क्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रिया

रतजः हैयोर्ज्या श्रम् खेट र र नदार में र राजा ग्रेम विवः स्वाधागी व्यव्यः ज्यूर क्राय्यः शही हुँग.राय.म्।व.थश.श्रीवयु.व्विथ.वीट.टायी ब्रीयसैकार्यायस्यास्याप्रामभासासीक्रेट्रा

मिट यर् वार्श्विक प्रति हैं कार्यों र क्षेत्र न प्रति। वन द्वा कुर कुर किर के निषद स्तर अहिं। र्रेहेर्र के देश है। या ये प्राचन वर्ह्न गुर वर्ह्न यस्ट्रिस्यय म्बर्स्स्य

এমনাঙ্কু ক্রমন্ট্রদা र्वे म्हार्येन व्यायासुर ये देहार प्रदेश परी אָמים בריאָמים ביציבלים לק יציערן र्ट्रेष त्रंब रेचिर म.ग्रीमायक्तीमायुषायक्तीमाराप्राक्षेता लर् विष्ट्र अहं स्थापंत्र यथा सुक्रे वा प्रकृत्या ८४४. हिर्चायाः हुन्दः या चीयीया राष्ट्रा हुन्द्रे ग्री. सैचा ुष्यं शुरु सैट यर प्रदेश रायु सूर्य वोषाता ही था। शर्ष्य हिंदे भ्रीत्र स्वाधाराय तीवाधार हिंद वा हूंद्र प्रवृद्धे दृह्या गुत्र प्युक्ष या ग्रामाय प्रक्रित्। र्वार्थवात्रायुर्वर वांचयान्वात्रायात्रायात्रायाः गुर्वा वृ्चारमक्र्य स्टूर प्रदेश से मुक्त स्टूर प्रदेश वर्गिन् यन् दीरश्राशी द्येना ये प्रेन् देन रुन्। इमारायु सूर प्रायुक्ष की साम्या प्रायुक्त <u> निवेदश्येन विक्रियों निक्रम मुर्देशयो निवेदा</u> मर्वित्र कुर रेवाप्पट महिका छेट महिका हैर है। रुरकुष्परमार्थिक्षकुष्परक्षिम्हा श्रेवाळेर देवाचंत्र श्रुवद्ववासळर रुखे।

वीक्षर.त्युत्र.क्षश्चर।	પ				
दे:केंन्याःश्रळ्त् कुशन्यंदेः न्द्र केंद्र चुैश					
विवानिवार्स्वार्यदेहिं हे र देश हें द गुट ।					
शविष क्रिष प्रहेष प्रहेष प्रवाद रेति या सुवा					
विषयः ह्र प्रस्थाया प्रत्यः यासूनाः है, यवा यहेल ।					
ক্রিঅ'য়য়য়'য়ৢয়ৢয়ৼঢ়য়য়ৢয়ৼঢ়'য়ৢয়	1				
चर्रम्भ मार्ग्यम् क्विंट कुवाकु नवाद स्वया द्वी	1				
शर्क्टशाचेनाऱ्यात्त्रां हे.ह्याचे बाजा	1				
रट वीर घ र वा फुय हें के या यही गी है।	1				
ङैया,चा,चांसेच त्यरका,चांच का श्राकृता न्य.स. हुन. स्ट्रा					
र्ट्टेब के यह वाब दर्द प्रयोध प्रतिवाद के विकास					
यस्र यन देवाका ग्राट पार्विक कुरि खुट पार्विक दु। ।					
বর্ট্রান্ যেমা অন্ 'মঠি ট্রিমান্, 'মিশা শিক্ষা					
লব.র্লপ.প্রথম <u>বি</u> শ্ব : ক্লিবা, দুস্ : শ্লী, রালত : বণু ।	1				
এম'বু'র্কুঝ'নখুম'ন্ত্রীম'নশ্লুঝ'র ঋদ'।	1				
অষ্ট্রিক থকা বাইবাকা করে। করে বার্ট্যবা যে বাইকা দী।	1				
वहिनाषाः त्रवाः स्ति व्यक्षः नुप्ति व्यक्षः नुप्ति व्यक्षः विष्	1				

かいしばみずいはメ				
ક્ષ.સૈક્ષ્મન.પીટ.ફ્રીટ.તામ.સંકૂપોનાટ.!	1			
द्रःक्ट्रियाशःयाश्रीटःवीशःक्षेत्रशःस्र र श्रुः यः इस्रमा	1			
৲য়য়৾৽য়ঀ৾য়য়৸ৼঢ়৴ৼৣ৾৽ঢ়ঢ়৴ৼৄ৽ঀ৸৽৳ ঀ	1			
यर प्रमुक् ज्ञियानु स्थानिय पत्रियानु वास्त्र वि	1			
নগব শ্বাহ ঝ	गःर्सैनाःत्रुःक्रैयोषाःत्रमाय्येत्रयोषाः श्रमात्रीया	1		
कुळेनळेग्दि	রম্বন্ধ শুন্ম শ্রম হাত্রা	1		
ব্ ট্ৰস্ত্ৰীধ্যথা ৰ গ	चुःचेषाशःस्त्रःद्रटःच <u>त्र</u> ेषाःची।	!		
ह्मेग्य खेट खे	र्न्यः देशक र क्षेया वी यो क्षिश	1		
चीलयं कुलाचा सूर्यात्त्र देह्या अश्वया चीलता केटला यथा में उद्गुर प्रथा त्रेता शह्या श्रव्य श्री उद्गा श्रया सेचाला श्री उद्गुष्य त्राप्तु श्री अश्वया गा श्री त्रथा त्रुची द्र्मुच श्री श्रुप स्वत् क्रिय हो।				
अविदः हुँ नि	इत्र्र			
ক্টিন্য,র্মুপ ,খ্রী,	र्तिः ह्वाबन्ह्र्न्यम्बन्धः विक्र			
हेंन्द्र 'र राग'क्।	षयःचरःद्रबःद्येः द्वेबः द्वेदः वीषा			
র্বন্ধ:শূ:সদ	तत्राक्ने बैट के दुशतहुर।			

এপ.এ.ব্ৰ.খুখা चैट.क्व.क्षमभ्यंभी.श्रटव.चरच।चोश्रर.सुट.तत्र। इसर्रेवायहस्य प्राच्या द्वेत्र मुच स्वा नाया गीया ब्रिन मर्दिन क्रिय क्रीय प्रक्रमय परिस्ति क्रिन खा क्ष्य क्षेत्रायदे क्रय प्रमुट क्षेत्र प्रमुख्य सुरायय लय.सॅश.बेंट.ब्रीश.इंट.ब्रैय.वीशश.श्रुव्य.जी ग्रेय नवर अकूर मुंब म्यूरेनशराय अवता संग्राशी वक्चर विश्व द्वारिये दें रें र वर्ष यह व श्रवृष्ट्र, प्रद्वेतायह्र्यं त्रायाच्या वीषाऱ्या युवाद्वरायद्वाद्वीहरू रायदे अर्क्केवावी बच'कुष'य**ारअष'टवार्देर**'केंद्रेर'दुर्टा गित्र अर्हेर क्वेर ए र ज्ञिन की मित्र क्रेर यंदी व्यास्थायकुरस्य विषयित्यात्रस्य येषश्चरात्राम् न्येत्राम् स्वात्त्रीत्यात्राम् स्वा वहवर्ष्ट्र होवा यो दवाव चय विवाध स्वांशा ट्रशक्र र दर्वेश सेवी क्रिया दए शिवत हैं र बिटा चर्ग्रेट त.चे.चरु.चोड्रचीमाश्च्रायचिषमासीयामा

90	থ ধ্য'শৃষ্ঠি'ই	শুন্ত্ৰ ^ম া	
भुगित्रः देव प्रयक्ति यमुक्तिर स	भुषा	•	
विमानपानु स्थर सर्केन परि परि	ব্ৰমথতা	1	
वर्षः द्वार्यः द्वारायः व्याद्वार्यः ह्यु	PU51	1	
∄.चेजाऱ्.शक्र×ार्ड्स्ट्चो.ड्रेट्चेप	प्रदेश	1	
	वारादवाद्यस्य	থ ৴ৰ ্গীঋষৰ্মশ্বত্থা	1
	क्षेर हेवे अर्5	কু'ববুৰ'ক্ৰীঝ'বধুদ'ব্দ'স্কুৰ।	1
		ग्रमः इसार्यस्यानीयान्तरितः याना	1
	र ्षे र ुद्ध	श्चित्रायोत्र इसम्यास्य ।	1
शर्नवृत्रःश्चेशःशक्ट्वार्नः शतःबृशः	'Q3C'3C'	1	
विकानु-द्वान सम्बन्धिः चर्		1	
हिंह पर्द्व कें ब्रुप प्रिये प्रथान		1	
चश्चरायाच्यः योष्ट्राचः सः हार् <u>ट</u> ्रास्			
	00	9	
	ह्यायह्रह्र के मे	गुर्भात्र प्राप्ति ।	1
	वहस्रद्धवा	प्रह्माचेर्णीयवाच्चवारास्तरा	1
	व्यायनुद्रायमः	নু অন্তম অৰ্শ মিশ্মিশ্ৰম।	1
	यहेम्बरासहर	र्ह्र र बीय राष्ट्र केट यहें ब यह ब।	1

विश्वद्मीक्प्रीत्यः रेर स्यतः क्रेश्वर्यक्षेतः परी

वर्ह् न द्रेष तिविता चितार के न तर्र द्रे यो या स्वा की या क्र्वाचीयचैत्रेर वीषजन्त्रज्ञवीषान्तर्चर वाहेर। वर्षितः स्थान्तर्भितः हेर्यः हेर्यान्यः स्थान्यः हेर्या क्रियाक्रेन प्राप्तिगर्यावर क्रियानी साम्बर्धिन पर्वेट किया चर्डेन्य जाउर्ष्य, द्युर द्वीर च र्ड्स्य की दि। क्रद्राचित्रयुद्रादेवाबावाबीर कुर्विद ख्रियक्रिया वर्षिशास्तुरास्ट्रियः हुन्स् स्व हिन् स्वव सी रचिरमास्य देवारामार्श्वेषाराय म्यान्य र्मेशियायसम्बद्धाराम्या क्ष्य राठु ज्ञिरकालामा ख्रेन ख्रुठ के शूर प्रायमाया

भरं विराविभाग्नी हैरायावारारायुग्नराया पर्वःस्वाद्रवातात्रात्रकारम्यः गुष्राचार्यास्यस् रततः स्वा नेषः रचः रचः ब्रो बर्दरश्रस्यः

ध्रेट त्यवितातकुट कु वार्कुट तार्ट पत त्यंत्र समा

विवक्ति वहस्य न्यय हुन् रेविहेस सुह्रेयायां

चीशर.चतु.भ्रश्नाचर।

जयास्र देशस्य सराय के स्रमाय दशक्षात्रमाय स्माय

क्रियहूर यह्त्रक्रवासूर्कि: रास्क्र्य सैंगानुष त्रक्रावसैंगाश्रास्ट्रतास्त्र । लव हं श्रद्धः स्थातारः

्रेय शर्मित्याश्रर क्र्य द्वारु वर्षितः श्रीमाञ्चितः देश वीनाश्वर वर्षियोगान्त्रात्मा मार्ग्य विति हिंगाश्चर त

मृत्वर मान्यायहेब मह्य के अक्ट्रावीया क्ये हुंबा देव दिवी में वीक्राय यथ या प्रमाण में हुंचे.

्रा । त्रम्म क्रिस्स प्रमान

के इ.नर्श्य य.य.य.यथायातियातक्तात्रा

कैवाय्युविष्टारचत्रीष क्रीक्ष्रिट सुर्द्र्य

ক্রিনার্থন্যসার্থকার্য্রীধার্যন্দ্রধার্মার अयन्त्र वर परेट्र क्रथण्यी पर्वा में विषदी इस्रेरवेशत्रविष्यत्रीयोग्नीश्चर्यर्तात्री

वीर देवी होते त्रारं राजे राजा क्रवीश होरी २०१२ के देव थेर छु: शुरू राक्टेंब यथेषा कुणयन्वेषयरिष्ययाययिन्द्रेवयरी

अगर्ब रे र वार र स्प्रेश्नर की वर्षेत्र

इसर्वादेशयनुद्धिये यस्त्रीत्राक्षी यदे । यद्या मुक्त मिक्र हो यदे स्वयं अप । या ब्रेन्यायन्यस्येयायुर्यस्य इत्या ग्रेष्ट्रविष्ट्रकृत्ध्वर्षेत्रकृत्याः स्वायन्त्रवा को हिन्द्रप्रकट त्युट्य वित्य नेवाय वाह्य द्वाय प्राप्त के वित्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र के वित्य क्षेत्र का वित्य क्षेत्र का वित्य क्षेत्र का वित्य क्षेत्र का वित्य का वित्य

, त्रुष, त्रुष, त्रक्ष, त्रवादा हुन्ति हो .

इस.चे.च.चर्चेचस.सूर्

चरिशकारचा,हूंबराय,हूब त्रज्ञी

को थि.शू.ची.२.शई.सू.पि.ml कैजाप्रेश्च वाशर वाशेश वश्चितार देश.२४.सूँचा वारा । शर्ष्ट्रश.

क्रेन्द्रिव रुव म्बर्भायानित्रे है। विद्यान् विद्यावितायीत्त्यायान्त्रिक्षाम् विद्यानित्रे हिर

त्रेतायर्ट्र-त्र्रुष्टि । रेता रवयविषायः क्रियायः अस्त्रात्रेषात्रेष्ट्रम् विषायिषाय्रेषाय्रेषात्र्यात्र्या

त्युः यद्या व्यवास्त्र व्यवासक्ता द्या स्वयं यत्र स्वयं व्यव्य व्यव्यवित्र वित्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व

ती क्ष्रीयन्थानीत्राक्र सुरूष्ट्राम् चर्चा इत्स्य श्रामान्य वास्त्र विवास विवास विवास विवास विवास स्वास्त्र सि

्ट्रयः अर्क्ट्र्यः अञ्चर्याः योक्त्यां विषयः इत्यया दिवायां विषयः यातः क्षेत्रः यातः क्षेत्रः यातः क्षेत्रः य

र्मिन् क्रिन्यसम्बर्भित्रसम्बर्धाः हिन्। विद्यन्ति सम्बर्धिया समिति समित

ष्रभाविष्मित्री अपन्य दिन अपन्य प्रमानि । अपन्य प्रमानि । अपन्य देश कि अपन्य ।

यहेर्यम् स्वरमानुष्यम् विक्रियार् विक्रियार् विक्रियार् विक्रियार् विक्रियार् विक्रियार् विक्रियार्थे विक्रिये विक्रियार्थे विक्रियार्थे विक्रियार्थे विक्रियार्थे विक्रियार्थे विक्रियार्थे विक्रियार्थे विक्रियार्थे विक्रिये वि

ला थुंह स्ट्री विश्वश्वाक्षित्रकूषा ग्री केवा तुर्द्धावा विश्व द्वारा केवा द्वारा केवा द्वारा होता विश्व विश्व

त्वेषे बुर त्रावासेचा विवासूर्यावात्रावास्थावार्यः इत्यात्राहुस्य त्युत्रियावारात्राच्याः स्वावार्यः त्यहेताः

चर भीय हुर चट्ट्याक्ता की अधिक इस रा है स्वासर हुर भी हुए विश्वाहर । उरे स्वास है स

त्रभात्रक्ट, ग्री.तट. त्रप्र.त्रभात्रभट्ट्य त्रभाट्ट्य त्रभाट्ट्य त्रभाट्ट्य त्रभाट्ट्य त्रभाट्ट्य त्रभाट्ट्य त्रभात्रक्ट्य त्रभाव्यक्ट्य त्रभाव्य त्रभाव्य त्रभाट्ट्य त्रभाट्ट्य त्रभाट्ट्य त्रभाव्य त्रभावय त्

ટ્રિયાર્ટ્સ્ટર્સ્ટર્સિયા તાલા ત્રાહ્યું તાલા હું કુના લાગુ કુના ત્રાદ્યા કહેર હો ક્લા હો હું ત્રાહ્ય છે. કુના હો ક

क्या ग्री अप्राया ग्री हुया इत्र य हाराया स्ट्रिय स्तर की ट्रिय ता प्राया स्तर हुया इत्य य त्रायू र त्यू . इया ता र यह वा विष्या ग्री हुया इत्र ता वृष्य हे त्या विषय ता र विषय प्राय स्वय हिता हुया इत्य य हा र ता र विषय जियह र त र र र ता वाया वाया विषय वाया हुत्या य ग्री क्या ता हिर्दे ग्री है ता व्या ग्री स्वय ता स्वय ताया

येशवाक्रीकावाक्रीयात्रह्टीविशवाक्रीसंश्ची श्रावित्तात्रकात्राक्षात्रीयाविवायाव्यक्षित्र भ्री ज्ञा. वाष्ट्रवात्त्रत्यात्र्या वावविद्वात्रात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्र

यहूँमाज्य विभागीर दे विभाग २८ विष्ट्र त्यूत्र की तांभी वर तार्र विभाग २८ भिष्टे त्यूत्र की राह्य की

द्शरीतार शुर्ख्ये हैं। ट्येनिकासिक्टिन्यमासिक हिन्दा प्राप्तियासिक हिन्दे.

ঀয়*৻*ঀ৾ৡৣৣ৾ৼ৻ঢ়৶ उद्देव नदेव मुक्ता श्राद्य क्षा कि र देवी वीन कुष नकी मूचन नकी हुनूर भव र वारहे. क्री महिस्याय्रेष साम्नेषण्या वर्षायाय भाषायहर्ष स्वावन क्रीया विवस्त मिन्य क्रीया विवस्त साम्या विवस्त क्षेत्रायक्ष्यि । वाराक्षीद्रायायद्रस्वात्त्रवाद्रावाद्वायाक्ष्यन्त्रावाद्वायाव्याद्वायाव्याद्वायाव्याद्वा देवा त्युविषक्तितात्रविषत्तर्थात् भेट्रव्ह्य्यत्रत्र्यंत्रत्यर्थेत्रवर्थेत्रवर्थेत्रवर्थेत्वर्वविवित्तर्था शूट्ये.

इ.चर्य यहश्रत्य नेवेटमाग्रीमयहश्रम्य द्वानाक्ष्य त्या ज्वार त्यु स्मान र्टासराग्रस्य नूष्यं शहूर स्वरूटेय नुषाय स्वहंत्यं येश हैंट नेषा महित्त्रीर शहूर रार होरे राग्रस्य र चर्टर विट्रा वर राग्न स्त्र म्या मान्यमा मार्ट्स राग्ने रिमा महामूम्य स्त्र मार्ट्स स्त्र हित्य स चर्ट्यत्तर ब्रियता क्रिंग विश्वशा चर्च्यता चर्ट्स्य वर्वेशा चराश्चापय ब्रीट ब्रेस्याट क्रिश्य ग्रीट. वरराष्ट्रःकिरवरिषयात्रायत्वीयमवरप्रदूर्शीमह्याश्चरवरिषणरविषटः वयः वर्षायाविषवाश्वरा

क्र त्यववायम्प्रप्रविष्यार्द्धवायर्द्ध्याचि र्यूष्या इवाक्ष्यः श्रीयत्रात्मा पर्द्र्यक्र द्वेर क्री क्रियर रा

विविष्ट्रम् क्रीस्व तृष्ट्र मार्थे स्वास्थ स्वास्थ स्वास्थ विष्य क्षात्रामा स्वीत मार्श्वे मार्श्वे स्वास्थ स्व

मूलायान क्रानिक वार्षे वार तिका वीर त्राप्त क्राप्ति हो। वार्षे प्रेय वे क्रिस्य वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे व

ग्विट त्रविर त्रायमास्रायदमास्रायसम्बाम् ह्रिक्ट्रिय चुर्मास्रायसम्बादमार स्रोत्र । उर्देरत्रस्यामाग्रीःह्यं वैद्युक्षाःहर स्त्री

ब्रिट्रचिट जायन्याबेशचीरियाजा भ्रिव स्यायुख्यवायमा क्रुय्यम्स्य रमायाकी द्रमाया भ्रीत्राया

तर.प्रायक्षराकृत्र स्वाप्ता वीयराकुर्य सूचकी ह्यात दे प्रथा ह्या कर वार राष्ट्री साधिवा विश

बर्दर्यः सुद्धाः देव श्रोक्क्वायर द्वेद यावे यथा की यावद यात्रव वर्षा अध्यय प्रकार यात्रव यात्रव वर्षा स्व ह्निः क्ष्मावेषर्वे । क्ष्माचेर्यायाचा व्यक्षमी मुद्धिक्षया बुक्षाये के मुव्याये वार्ष्य प्राप्त व्यथान्द्र भुःद्वित्तर्द्ध सुत्यक्ष देयत्वाष्ट्रम् नयन्त्रित्यत्वेयन्त्रत्वर्ध्व सुवानु वर्षम्भः वित्रमान्त्रम् । देविरक्ष्यत्रमान्त्रम् । देवमान्त्रम् वर्षमान्त्रम् । द्र बद्रायनुष्याम्बद्दाः स्ट्रम् व्यवस्याम् वास्त्रास्य वास्त्रास्य वास्त्रम् वास्त्रम्यस्त्रम् वास्त्रम् वास्त्रम् वास्त्रम् वास्त्रम् वास्त्रम् वास् युरेशजायस्यर्म्यायमा रेयोर्डमग्रीयङ्कित्री वैटक्ष्यग्रीक्षमधरतत्तर्यायः स्वायिक्ष लुष्या द्रेन्यक्ष्याक्रीराजाक्रीयाजाक्र्याश्चर रद्धिराज्यर रद्धारुष्ट क्रुवायाजालार विषयाना विषया इंस्टर्राष्ट्रयायकान्तरप्रेट्र्ये क्रियप्रयुद्धियायकायायक्रम्क्रियायायक्रम् क्य वर्षिय त्रिय नात्रा हुँ तारहूर भुर्द्ध ह क्य तु है कुर्य हु है स्थान पार्टित तर्र क्र हिन्य हो विकास भैं भैंच देर वर्ष्ट्र वंशवा की कूर्याता वर्ष्ट्याता वर्ष्ट्र दिए किय की अध्याता कूरा भी भैंचा देर जा क्रा প্রীস্ক্রবিধাপ্রীবার্ব ক্র'ন্থির অন্দ্রবার্থার স্থান্ধর মেরাপ্রীবার্ব প্রমান্তর মেরাবার্ক্রবাধ্য

ष्रात्र्यर्त्रत्यात्रव्यात्वे क्षेत्रित्यात्वेष्ट्र्यं देशवः स्वाधात्रात्र्याधारात्र्यात्रात्वात्वातः अवः अस्य वः स्थारायवेषात्रेषात्त्र्वात्रायः देशायवैद्यं द्यात्रायः विद्यायः स्थारायः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः कुैशतर्राट्रेष्यतरंग्राचन्नम्बर्धित्रर्भात्र्याच्यात्र्याच्यात्र्याच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

चेरेशक.टचे.क्रुंच.ततु.क्रूंच.उच्ची

न्नेर्जुबर्वर निवयवर्षर्थरावेट क्विजुक्षियकरावित्र क्वियक्षेत्र स्वित्वे स्वित्वे स्वित्वे स्वित्वे स्वित्वे स এম.এ.হু.বুখ

ट्रे.चर्ट्यायमाध्यमासीनुष्य नायट्रे अर्था निर्धातीमा हे. द्रय तुष्ट्र मार्ट्य सीकैनास्य मार्ट्य भारतिर. ধম:ডব্ খ্ব

ट्रेलट्ड्याश्चर्डेक्शश्चरत्रेचनजद्रशत्रवीत्। क्रुषड्यातक्ष्यर्द्धत्रमभन्नेत्रवेचनान्वर

क्वाग्री मुरामा ब्रैवाया के में प्रतास में हुंद्र वया पाद नाय देवा के का क्षेत्र वा स्वर्थ में स्वर्थ में स्वर्थ में

क्रुमसीयर्ग्येयांक्ष्मीर्यूर्य वर्द्रमिक्षम्भीमात्राञ्चत्र ब्रिक्षम्पूर्य स्त्रीमात्राय स्त्रीय हो। वसः

द्रशक्त्रक्राक्र्यामा द्रक्ष्यत्रयम्बर्ध्ययायात्रस्याचारस्य अस्तर्वेस्यद्रम्यस्यायात्रस्य

ज्विर रायुरिक क्रूबोमारा स्रेर रायेष रायुवे रायुवोधेष रायारा अहरी रारवा हेरे रायुर्ध रायुर्ध रायुर्ध राहुत्य गा त्युःमेषारचाभीषाक्ष्तात्त्वेषादीतात्तात्रादिति। वितक्ष्यभीष्यातात्रीयवात्राद्यायात्राद्यायात्राद्या

चेत्राच्युरे में हैं र देशश्चेष्ट्र में शासी कार्य के राय कर में स्वीत के स्वीत कर के स्वीत कर के से

चलाच्चिर स्पृत्रेक्रियं स्पृत्रेक्ष्र संस्कृति विषय्विष्टरायस्य दिव स्ट्रिय दिव स्वायास्य स्वारमार स्वारम्यः

मूराशकारीयो वर्ष्ट्रिया क्रिया क्रिय क्रिया श्रम् तरात्रात्रय तत्त्रयी वृषाचिष्टरास्त्री दृष्ट्विमः मन्त्रवीः मुष्याचीन स्त्रात्वेवाः चेन वारासः

ब्रुन्धिशासरत्रद्रासम्बर्धान्त्रम् अधिबरायुः क्षेत्रत्रम् विवाद्येषा देव्दर्यातात्रात्रात्रम् विवादा कुट्यक्त्रयांक्ष्मप्रकृष्ण वर्षम्यक्ष्ये युट्क्ययकामुद्रिययर्थे हेट्यकार्यम् स्वर्धित्रे हे

क्र अधियातमा तामार्स्य यर्पर वि.स.च्य्याबित्रता वर्त्याविमातमा की सूर्या में विभाव भारत्ये ता

लुष विशेषा रेशवर तामार्ट्र तार हुए विशेष तामावृद्ध प्राविश्वावी के कुवा विकित्य राजात्रेर.

चर्चर ताश्चाचर क्षेत्र त्युर चे त्युर्थ । युद्धर ताज्ञीसी चर्डस त्युर्श त्युर्श ताजा तर्दि वी त्युर ताय तावाद है। चर्डस त्युर्श क्षेत्र तीस दूर्णा सर्द्र र तर्देश दश तर्देश त्या क्ष्यां श्चर ताया विषय त्या त्या त्या वी व्यक्षित त्या वी त्या वी व्यक्षित वी त

अर्केन्यर यहेन्य।

रटार्चियाम्बुखा बर्क्केन्यरायहेन्या ईकायरन्द्रायकराया व्रव्यरायक्ष्यायर्था नटार्चेबी

इ.चर्क्य.स.भाभागातिवातक्वात्त्री।

विषात्तवान्त्रस्त्र नेयात्त्रम् पर्द्ववार्द्धवार्द्धवास्त्रम् विष्यम् नेयात्त्रम् विष्यम् निष्यम्

क्रियर्ट्स्यर्डेश नेशयर्ह्र्यस्वयद्भयद्भयद्भयद्भयस्य स्वरंद्रिया उर्द्रम्देश्कृतास्वानुर्वे वेषावास्त्रा उर्दे वे यह्न यहें वर्ष्ट्रस्य स्वेषाय स्वेष यद्रा वर

कर् शुर्यित्यर् हिर तथी पर्रय स्थापक्षात्र्य स्थाप स्थाप हिर के क्ये हिर पर्वे रर्टा वर

क्रुक्तियर्केट क्रुव्यायर्ट्य प्रमेट ग्री स्था स्थायर होते क्रुव्य स्थायर प्रमेत्र स्था स्था स्था स्था स्था स

र्र्ड्रिंग्कर्। इ.चर्क्षेग्रह्मर्थातारविषा रिक्यूर्ट्ड्ड्रिक्ष्मकाल्या इ.चर्क्षेग्रह्मत्त्वरिष. विहेर्सि वयक्तेरियम् वानुवयम् वेवाययध्या वयम् वेवायक्ष्यययरिवयस्य मिन्यय

व्रम्भयाम् विषया न्रें मान्यम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् लर क्षामान्त्रीयामान्त्रीयामा वहत्राम्ब द्वापाक्ष्यं प्रतान्त्री स्थान हिंग स्थान स्थान

मुषात्राचित्रविषात्रम् स्वायात्रीकृषाचयतात्रद्यं चार्षयतात्रद्री वार्षयतवादः स्वात्रीयाहे सःस्य यविशतर्यर्यत्यक्षेत्रत्रम् विश्वतिश्वतिश्वतिश्वति विश्वति विश्वति विश्वति विश्वति विश्वति विश्वति विश्वति विश्व

विशेट थ्रे नर्ड्य म्ट्र्य कुर्केट बादर व्रिवालय लट इं मर्द्य महश्र द्विट श्रीश्र श्रविहर सामा व्रिवा ग्रीट स्रोत्री शास्त्राचर त्रविष्यामात्र सर्वाचित्र स्रित्ते स्राप्ति स्रित्ते कर ग्रीट हे त्रस्त्र यावि यावर योग

য়ড়ৄ৾ঽ৾য়৴য়ঢ়ৄ৾ঽয়৾ ट्यार क्षेत्र शहरीत प्रहे स्वाक ग्री अववायर विराग त्या क्षेत्र मिया प्राप्त क्षेत्र स्वाक स्वाक स्वाक स्वाक स ब्रीय प्रदेश प्रकृश में शवा यो अकूर प्राह्में अहर प्राया श्रेय हे यदा अविश्व प्रायंश्वाया

लटक्रुम् द्वेट्रत्तृत्व्याश्चर स्थानाकः ह्या ट्यायक्षात्त्रहे तथा इस्यूच्या स्थान्या स्थान्या र्यायक्रम्यत्रेत्रेत्रे क्रायद्वरम् म्यान्यवास्य विषयक्ष्यायायात्रेत्रः क्ष्यायायात्रेत्रः क्ष्याय्याया

क्रायिकप्रस्थायान्यान्यम् अक्रियद्वायान्य स्वायान्य अक्रियान्य स्वायान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स

लट रेत्र य क्षेत्र वश्चिव वीक्त्र्ये सद्भावा हूँ सावत ग्रीट माना कैस माना विषय प्राप्त होने र विषय हैं स

तर्ह्याचित्रक्ष्यात्रम् निर्मात्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम्

ब्रेन व स्थानवार प्रवृद्दि यह विवासिन व स्थिन सामार ने न र यह यन सुद्ध वर्गनि विवास व वा विनिय यह य

ध्यात्रेशन्यात्रेशन्यात्रेशन्यात्रेश्वान्या इत्यायाया द्वात्रेश्वात्र्यायात्रेश्वात्रात्रेयायात्रे स्वायः

भ्रीयानम्या वित्रत्यस्य स्विवास्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य

श्चर्यद्रश्रक्ष्यक्षेर्य्याट्यर्ययाया यूष्यम्य प्रवित्यायकार्य्याकास्त्रर्यस्य श्रावकाग्रीज्यः

र्ट्ट नमा स्था भारत हैन यो पा की

शरतार्वे यहेर विश्वास्त्र सेवीशहर त्रव्ये हिर त्राया हिर तर त्राया हिर स्वराया हिर स्वराया हिर स्वराया हिर स्व याक्नेयाचनेवाम्नेत्र्याचहेत्रास्त्र्यायारमायवायराम् वित्रेत्रेत्रेत्र नुष्यायाचहेत् स्वायह्त्यायार्येत्र हे

तम्राथन्त्रन्त्रम् मुन्द्रम् स्वायानाम् यायवान्यवानाम् देयाः हे यस्त्रम् मुन्ति स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स कि भुभर्यवर्केन मुम्बस्ययमान्त्र त्रयक्षेत्।

तथारीटाराप्रदी र्राज्य क्षित्रकी हुशाता सूर्याया निर्धाय प्राप्ति वर्षणा वर्णणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वराष्णा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षण

र्यस्य त्याव ञ्चारेत पार्चित यहे प्रताप्त प्रतापति वा स्थापति वा स्थापति वा स्थापति वा स्थापति वा स्थापति वा स

हिर् ग्रीट देन्युषे नमीट प्रक्राज्या । विषाचारी स्था हिर ब्रीट्स न्यूया माजीट हुंचाया ना स्टायहर । युष्य मीच त्राप्त अकूर त्या अप्रेयता र होरी । विषाय हुर र या ग्रीट अभाग्रेय दे क्षेत्र होया । विष्य प्रहुर्ट.

।चलक्षर्य मुर्च प्रमुख्य प्रमुख्य प्रहेष प्राप्ता विम्ना क्ष्य मुन्न विभाव क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्ष हेर्य प्रयो | हिष्म प्रमुख्य क्षेत्र प्रमुख्य क्षेत्र प्रमुख्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र

शन्त्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेवराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेवराष्ट्रहेषराष्ट्रहेवराष्ट्रहेवराष्ट्रहेबराष्ट्रहेषराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेबराष्ट्रहेवराष्ट्रह

तूर्य तात्राक्षात्रसूर्य वेषावाक्षी द्रक्षित्रेत्र सिषा क्षेत्र वेषा क्षेत्र त्युवेष दे त्युक्षी क्योन त्यु स्थान स्थित विद्या विद्या विद्या विद्या क्षेत्र स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थ

त्रभान्तरमाहूनमात्रात्र्येत्रम्यात्र्वमायहेस्यः हुत्यः सहस्यत्रम्यात्रस्य हून्यमाहूस्य यात्रात्रः वृत्यः

बीचा.कैट.टेज.च। जेट.ट.कंब.ना ह्याया.तट.कंब.नाधुवा.एय.तट.देख्य.हा शह्.हं.केब.जया

न्यारयक्षिशः वृद्यक्षेत्र वहंत्रक्षात्र्यात्रप्रेथरश्चावाताता द्वावात्त्रप्रविधात्रप्रविधात्रप्रविधात्रप्रविधात्त्रप्रविधात्रप्रविधात्त्रप्रविष्यप्रविष्यप्रविष्यप्रविष्यप्ति चन्द्रच न्यान्य न्यान्य न्या । विद्यान्त्र न्या । विद्यान्त्र न्या । विद्यान्त्र न्या । विद्यान्त्र न्यान्य न्यान्य । विद्यान्त्र न्यान्य । क्य.रे.भ्री.तर प्रकीर विषयटा रेशर्यात्र अधिरायण श्रमात्रास्य स्था सारा विश्वा तर यथवारात्र्रये वे प्रक्रायया । दे छेट यसेगत्र र शिवासूचारा श्री । हिंचा प्रह्मा स्ट्रा स्ट्रा प्र कुटा विषय्वियरम्यास्त्रः भ्रैमान्यम्यावियावित्वान्त्रियाचित्रात्र्यस्य यान्तः ह्वायान्तः स्त्रीयान्तः नुवासानु र.किंत्र्य.तथा वि. ह्याया. ग्री. स्य द्या त्रारीया देश स्तृर द्रारा साम्रात्र स्थाया स्थित या स्थापा है वा दे इन्द्रियोष्य जरिवायर विषयर्तृषा वर्ष्ट्रम्यानात्त्वास्त्रयेषास्त्रम्या ह्याक्त्रयं क्रीयायायः र्जना ग्रीट त्रेयः द्रट न तूर्य। र्रम् शावर म प्रेम मध्य न इंच क्या त्रूचा य वास स्वार्थ प्राप्त वासिर म त्रक्षेत्रक्ष्र्यदेत्रत्तर्वर्वेष्ठ्रम् सूर्यामाजीमानाङ्ग्यत्तर्दा दक्षीवत्रवीषर्वर्वेष्ट्रवामासीवास्तरः श्रेर तथाश्रव र तर्रात्र विश्वास्त्र तकुःभेव तर्वे विश्वाचीर देवील तकु त्रांश्योल रहा विवय त्यारी ्ट्रियर्ट्स अरशःकेशलानुवानु द्वितङ्करः यर्टा र्यायनेष द्वेरः व्यस्ति हिरानः कृष्णिलक्षेत्र। भट्ट्रयास्थान्यस्थार्स्यः स्थान्त्रयः स्थान्त्रस्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य त्तर्क्यस्याच्याचीयाक्रक्षियारम्यायाय्यस्य स्तिन्तुः भ्रीपरमायुरम् श्चरायहेब क्रियपट प्यापकेर यावर सावन रता गावि हेरा स्रावन यहिषया हित से द्वीला

 এপ্স.এ.ব্ৰ.ক্ট্ৰপ্ৰপ

र्क्तानुष्ताक्षाक्षेत्राह् संत्र विधानान्त्रविधानम् स्वात्त्र्य निधीन निष्ठा निष्ठा स्वात्त्रक्षेत्र स्वात्त्र

त्रुकुल्लाः स्थानार्थानीभातुष्यं त्रान् हुं हं उक्तः क्षेत्राजुरे तानुक्षीनानान् । स्थानानानानानानानानानानानान

क्रियानुकाने खुर देवावा क्रियान ब्रियान विवा क्रिया देवा क्रिया हो स्वापकार क्रिया कर्म क्रिया क्रिय

क्रियन्त्राधिक्यम्हे स्ट्रीयम् स्थापित्र क्रियाचीहेर क्ष्याची स्थापित्र प्रमानम् क्रियन् अयस्य

क्रथयद्रेट्ट्यर्रेट्रक्ष्यवययद्रेव्यक्ष्यंवेव्याट्ययद्रेव्यव्ययद्वेवःविक्ययत्रेव। रविरःक्ष्यव्यवस्य

स्योवासीक्ष्यत्रात्रात्ववाह्नेत्रात्राद्धार्यवासाह्यवित्यान्त्रात्वात्त्रात्त्रात्वात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्

य.रट.क्वांग्रीमाक्रवीयतीमानुष्यीयताटताटताट्येरतानुद्रीटा द्वीतान्त्रेत्र व्यवस्थायाः

क्रुणिम्प्रुप्येश्वरम्पातास्मिषास्ययः श्रीमायद्रेशित्यम् यात्र्या द्रीपायस्य यञ्जास्य स्वास्य स्वास्य

लुष्र तर हु इं उक्षर ब्रोक राषुरे ता कुर्याचारा इश ब्रोकर तेर हुसा विषय हु योष तर प्रथम कुर से र

भैत्रायूर्य वाषाचाङ्कुरःस्रेयमायर्ट्र राम्नेमाचायेषायदेषाङ्गेषाङ्ग्वीयर्ट्यायहेषायहेषायहेषायहेषा

स्थावेशराचेश्याक्षेत्राक्षेत्राचेस्य वर्तेत्र क्येर्प्याश्यास्य स्थायास्य

ক্রিমম্মন্থ্রম্বর্

र्रेबयरद्ययठवया

*কুবারুবাসমা*র্করমান্ত্রীবাসন্ত্রা अयद्भ व्यर पर्टे दिस्सार की पर्टे वो ह्वारा से

इ.स्रेर बेश यांच्य नर्या ग्रेश नपर तर है।

व्यानयान्त्रस्य है। कैवान्युत्वविदः रचानिक के हिन्द्रमुद्ध की बङ्गित्रस्य स्वात्रमान्य निह.

तर्भव्रिक्ष्यभाष्ट्रभाष

ग्रिषपार्डेबयर न्ययक्रयमंत्री

पैद्वाम्बार अवार्यकृषां वीषा अथवा सुर्वे प्रमान स्वार्य प्रमान स्वार्य प्रमान स्वार्य स्वार्य

बर्वार्ष्ट्रम्बर्क्स्यावाजीश्र्र्र्र्यवाचित्रस्य स्थान्त्रस्थित्र टर.एम.वीसीरप्य.म.वीसा.स्प्रीय.स्प्रीयन्तरी हि.समस.स्रीस्यास्यास्य

तर देश द्युक्त क्योता का गीट । क्षाबर तर क्षेत्र सूर्य तता श्रम श्राबद्द का क्षा गीवार श्राव तर विद

क्वायमण्ची देशतर्य अक्षे हेर् २८ व्यायणी होना तर्ययमणी देशता होने हार्याया मान्य यास्यः त्येर ताशक्य तर शहर यं गृह्य शर्मायाय्य द्रश्य ता में शर्म क्रिय क्षेत्र वे ग्रीय क्र्ये। यर शर्म

८वाने य्याट वासुहः र यन् वेह्न भारवेषाची यहून यर्डेशासन स्वास्त्रवर नायसाची देसारा वास्त्रिता न

এম.এ.৪.৪৯৬ ष्यार्ट्रब्रायर सैटायवारकर नेवारा रटा थय नेवारा योशवारीवारा वर्ट श्रेयवारी श्रेट वर्षा रचाक्रर.क्रेंटरे.श.जर क्रीकेंट.प्रचाशक्रय रचा मुर्चेट रहेंग्रीय कार्क्टर यत्र हेंस्टराका रहेंग्रे क्री क्री कार्चेट था. शर मुर्हेस्य तात्रा वेशा वेशाचीसरशत प्रदेश दुव्हिर ताश्चरत्रा प्रदेशकर क्षेत्र चर्या वेशा विश्व ताश गिरात्रह्शक्रियं मूर्याप्रविष्टारयमुम्मूर्या हूर्वामाग्रीक्षेर मूर्याप्र्येषेषा अभारक्ये स्वातिमा है. लट.कैगन्द्रमिथेट.रचव्रश्यान्तर्ड,इंड्रूर्यमिश्यरीयरी र्जात्रश्ची क्रीयचेमिशेशकी जन्मीयरी देताश्रानुभाग्नेद्रमञ्जून नेतरकळ्टा यनुमान स्थान्ने स्ट्रीय प्रमाणुरा वासुर रा ग्रेय के द्वीय देवा विषय्याय निषय के विषय के व ट्रूट्र चोर्थेश्वार्त्राङ्गी विटिशकतः भ्रिकायी विशेषात्री विशेषात्रात्री विशेषात्रात्री विशेषात्रात्री विशेषात्रात्री म्निट नवी विर्मित्न विषय निषय मार्गित मार्गित मार्गित विषय मार्गित विषय मार्गित मार्गि यशिरः रचमविष्यं रामाविष्यं समाविष्यं समाविष्यं क्षणम् सम्बद्धाः स्त्रीयं सम्बद्धाः स्त्रीयं सम्बद्धाः स्त्रीयं विट्रकुरायट्रीक्षेत्रीय्रेटराजवानाट्यत्येतायट्यक्ष्यं यद्भायाट्यक्षेत्रात्मेय्रक्षेत्रात्मेय्रक्षेत्रायात्राट्य जार्माय नुमानार्मु विवासन अवित्व द्वीयत्व दिन वित्य वित्व मान्य विवास मान्य मान्य मान्य मान्य प्रमान्य प्रमान तरात्र वर्षितः रवासूचकै यवुर्तरात्र्यत्रेत्रात्त्री क्रुंयो क्षेत्रीत्री क्रियोशितः रवाचशरा २८ यहेरः उर्वेशतात्राच्ये। वर्षेत्रतात्राटशार्ड्स्वोशतात्त्रीयक्रवोशतारट् देसंचितानियत्राचारात्राचितावर्षेत्रत्तात्त्र <u> ह्वान क्रीयर्व वार्यालेश रामार वार्य क्षेर तय सूय क्री वीत श्रव र मूर ग्रह्वान यहन या स्थान स्थान स्थान स्थान</u> त्राधुवीताश्चाची द्राप्त्रमे विरीक्षीय देशाचित्रका निर्मा विराम्भित्रम् वर्षेत्रत्रत्रविभगविचीतर्वेश्चर्यत्रात्त्री वेशविष्ट्रत्रत्यात्त्रित्र वेशविद्यात्त्री वशक्री वशक्री वशक्री वरिष्टः रचन्नश्रमः २८ १८ भीषा ग्रीटः इंदूर्ट्य विशेषा ग्रीचार्ट्ट्य दी यर्देश्ययं वायरंथ रावाविष्टः रचन्नश्रमः

उर्गीमन्द्रपर्भयपेन। রাপ্য, দুপার্য ই. ই. ই. প্র প্র প্র কর্মের ক্রিক্তির ক্রিকের ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিক্তির ক্রিকের ক विकृतियायम्परायहूर्यायुर्क्षपायाः कृतियायाः कृतियान्ते विकृतिया स्वत्या स्वत्या स्वत्या स्वत्या स्वत्या स्वत्य वार्ट्य हेर्टर क्रिया से वीट तात्रका हूर्य ट हे क्रूट विराय वाकार सम्माहर रामिय क्रुय राप्टी कार्या क्रिय. कुंशरमःभिषाञ्चभवान्तरं वीप्रविषाद्यं विषयात्रम् हो प्रदेश्वरम् हैंद्रायाया कैवायार्थन ८८.अ.क्रिय ८.क्षेत्र वार त्यवेवाया । गीय त्राश्रास्त्र क्रिय तार्य क्षेत्र वाष्यय श्रात्या । विषय विषय विषय ताभानुभारतिभास्त्रभास्त्रभास्त्रभास्त्रभाष्ट ्रुचार्रचार्त्यत्रार्यः सुर्व्यक्तार्यपर्ट्रद्रेत्रपर्द्रायाः व्याक्ष्यायाः वेत्रप्तायाः विद्यास्त्रप्तायाः विद्यास्त चलतार्थतानुरी देरात्राचर अटलाक्षियाद्यात्रात्राचेतात्रात्राचेतात्राचेतात्रात्राचेतात्रात्राचेतात्राचेतात्राचेत द्यायान्त्र-भीषायदेवाराद्रम्यात्त्रम्यात्त्रम्यात्त्रम्यात्त्रम्यात्त्रम्यात्त्रम्यात्त्रम्याः गुभाराक्ट्रायरायमाविदाराष्ट्रमानिक्षेत्रयायमानुसार्यन्ति पटास्यामहिक्ष्येर्यमानार हिन् <u> र्</u>यायाक्षेत्रस्य स्वत्यात्त्रीः स्वतिश्वायात्त्रात्त्रेत्त्रस्य स्वत्यात्त्रस्य स्वत्यात्त्रस्य स्वत्यात्त्रस्य ्रेयक्त्य। क्रूम्कान्त्रेर्यायमामक्रमायमामार्थ्यायान्त्रेर्यायन्त्रेयान्त्र्यान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्र र्वार वैर वैर विषय के प्रायमित्र कर महिता है है । क्षान्नेकृष्ट्रिया । ग्रीमानायर्ट्राष्ट्रायम् वामानार्ट्यात्राप्त्रायः विद्यात्रायः विद्यात्रायः । देवर्द्रवः वयर राम्नेर प्रमास्त्रीत् । भ्रियमान्य मीयर्व मान्यसी । द्रमार्व स्थापार माय्यसाम् । स्थाने भ्रियमान्यसी क्षत्रकाराष्ट्रया विश्वास्य विश्वासी वि नेलटर्टरम् व क्राय्ट्रिय च्युक्टिस्युक्ट्रिट अन् सेयार स्वयंश्वर्ष्णवाश्वर्षाया स्वयं प्रयद्देव। स्ट

এম.এ.ব্ৰ.ক্ট্ৰপ্ৰ স্থাপ विषागुरम्हनान्धन्वम् मुन्युन्गुर्ग नेहस्याय्धुनावतरळे ध्रियरस्य वर्वेन्वारपरकेयुर्ग क्र्यार्ट्रर यावेबार टयस्र व क्षेया वातव क्रीयर्व अयस्वायर्गी ब्रीय राष्ट्रमाद्रभावता सुर्वे प्राचित ग्रीट म्याचित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित मार्थित ग्रीट मार्थित मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित ग्रीट मार्थित मार्थित मार्थित ग्रीट मार्थित मार र्रे. देश ही वात्र विवा हो र ता क्षेत्र वा स्था क्षेत्र प्रया चार्त्र के ता वा व मिट्रा ह्रेन्द्रस्य नर्केट मिन्द्रस्य तर्क्षा निष्य सहस्य निष्य स्थानित स्थान विशेषा इर क्रिक्ट्रिक्ट प्रक्रिक्ट विविधानियाम् । क्र्र इस ग्रुप गर्र मार्थ स्थानाता दूर भीकृषामुचा देक्षा क्रीयाक्र्य ता नुरी नेश व क्रियं क्रीय ता वीटराजासेवा देवूराजायांचुत्र टी.पट व्योषायेषारायेज्य वितृक्ताग्रीसेवा राहे प्यान स्वाहर प्राचित्र प्राचित्र प नर्वासुर्द्धयनाश्वरणक्षितास्त्रिवानात्रुवार्वेषा क्ष्यिक्षित्रश्चरं तार्गुर्द्धर्टं सैनानाचेश्वर्वार्द्धवारा तक्तर्न्त्र में व्यक्तिका क्रिया क्रिक्ष क्रिक वृद्रकूर्य देष्ट्रम् राज्य भिष्णुयम् प्रत्या पङ्कितय र नुष्ट्रम् कूर्य भी भूष विवाय आविवाय हुर तरानिष्यतास्य झे भ्रियायराजा चीय त्युर्ययर सिवा स्थाया ग्रीया ह्या यहार स्थाय हे सामा स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय <u> </u>हेर्यायतास्त्रेयायः क्रीटातारित्या द्राययात्रमात्त्रीयात्रक्यातिटाक्क्यद्रायाय्यात्रियात्रस्य पात्रेयाः रक्षा रे.वैर अ.क्ष्य.क्षर क्ष्य ताय ताय र क्षेत्र र प्राय र विषय र विषय हिंग विषय हिंग विषय हिंग विषय हिंग मुमक्र प्रमुद्वामा केद्रीयमा देवियमाद्रमायद्यापद्यान मारमामुमामुमारमाम् मुम्यान भक्ता नेर हिब क्री भट्टे इंदर राक्कित्य या देवर ह्या यहंब उपसूत्र देव स्थाय तथा द्रभट उपरेश. থপনার্ম্যকর বিত্ত কুলক্রনোপার্থ শর্প বিশক্তিবার্মসন্ত্রী প্রসামার বিত্ত কুল নালকুল থপালাকু ট্রীড়ের বিদ্যান্ত্রমামান্ত্রমানার্মানার ক্রমানার ক্রমান্তর ক্রমান্তর মার্থ মার্থ ক্রিট্রের ক্রম দুর্ভীত করা ক্র पश्चरत्रर्थ। श्रीवशतीविद्रमुक्षणप्रविद्रमुक्षण्या हेशस्त्रमुक्षक्रणभीविद्रमञ्जेष वीश्वराताः श्रीटशाताश्रवरः द्विषाताश्रह् दे वीयाताः सूर्याता प्रक्रियां विष्टे द्विषाया विषयायाः नेष्ट्रसम्बद्धन्यसम्बद्धन् कैतास्य रामा व्यवस्य स्टर्गीय मह्त्राय मार्गहर् दुर दे स्थय योट यय यो स्वाय राम्य रामा व वर्तुश्र्यूरता शर्यवेतवा क्षेत्रवर्द्धत्य्वर वर्त्ववा वर्त्रवर्द्धत्रक्षणा वेतर्द्धा प्रेयर्चितरार्द्र,सूर्यभाती प्रक्रियंद्रकामकी वश्चित्रकाता वश्वितात्त्र हास्त्र वेशायविष्यात्र विवास स्वर्यः । तर. में बुरायित्या हर्मेर येथा त्वुय बुरात यु हीर न्यार माई र दक्षेर ग्रीय क्रिय हर्मित स्था हुत्ये. १८। र्देबर्पर्दरक्ष्यासुरम् दिवाचीबरम् र्देब्रक्षणारक्षेत्रवायकम् यारम्बराखस्य स्वराधारम् त्त्रमा त्तर्य द्वाराग्रीमाराम्याना क्यांत्राम्यान्त्रमार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः गर्ह्र जया इवारामधिशक्रीयात्यार्येत्या इवाराम्याव्याम्याय्यायार्यया शर्थाक्षित्रकृषान्त्रम् निवासवार्षस्यविद्यास्त्रम् देवस्य स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् वायश्चारति द्रेत्त्रंष्ये देश्वेषात्त्र्यांशेरः प्रयाच्यात्रात्र्यः वार्येषः विश्वेषः विश्वेषः विश्वेषः विश्वेष ब्रैर तर्वाचिका से वोबोरिय ताला वृत्वा अन्य त्रिय न ताला क्षेत्र त्र विष्य वास्य त्र वृत्व विष्य हेर्र क्षेत्र वि लट इथा उर्वेट ब्रीय दक्षित के भी करा वेद र लट झूबा श्रम इथा उर्वेट ब्री चश्यता दक्षि के वा स्था. रियातार्य्यामञ्ज्यानाभेटवादुमातमञ्जी कैयरेट कैयाममामभाग्नीमान्यानीमान्यानुमान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्य

કેંશ્ચય-, বશ્ચ વશ્વ હત. વ

क्ष्मार्यूटर् देन्द्रस्थर्भागुर्धहेरायर्थ्यस्थार्यदेयाय्ह्याय्वेषाय्यादेवायाः स्वायाद्वेषायाः

ट्यान्त्रक्ष्यम्बद्ध्यम् द्रमाट्यम्यम्बद्धयम्बत्यम्बद्धम्यद्वरक्षयम्बद्धम्यम्बद्धम्यम् द्रम्किन्ययः सम्बद्धम्बद्ध्यम्बद्ध्यम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम् इत्यद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्बद्धम्

यर्वाश्रम् हूर्वायारात्रः मेयार्यः मेयार्यः हुर्या दे हुं ययायार्म्य वार्ष्यः ह्यायार्ये रायां विवादक्षा यरः

रवात्रप्रक्षित्रमुष्ट्रित्यर्थसूचत्रप्रक्षुच्यत्रप्रसूच्युवात्र्यस्य नेयम् ग्रीमयत्तर्भात्रस्य

वर्श्विषक्षायनित्रारम्भायस्य सहत्राच्या वनित्रम्म्भायस्य यादेशः द्वीतर्मे द्वीतर्मे ।

त.कंर। विदर्भरूभे यहूर.येज्यायपर.येज्ञायम् विवायम् साम्राह्मायस्य साम्राह्मायस्य

वर्त्र नहुष्यवश्यातुर्धस्य यात्र देविदेशयर यहुष्य यात्र योतुरशा

প্ৰমণ্ড ক্ৰিন্দ্ৰ প্ৰথ

विद्वाक्षेत्र यथे यदे या सक्वास किया ।

२०१२ हेर देव येंद्र ग्रु. श्रु. दाई व ययेषा

विषयणयम् विषयण्य विषयण्य

ताभागः हुटारार उर्द्रेट दार्ग् हुटाश्चे तारा द्वाप्तकी ताराशा चीत्र वाष्ट्र हुत्व हुष वार्ष्टर ता । १४४. टेक्की भारतु तार्ष्ट्र ताश्चार ही वाताशाश्च्र राता भार्त्वाता काक्ष्ट ताराष्ट्रवाता हुत्व हुण हे. है. दीर्ग्र. तृवाद्र रा ताश्च्रात्र रा ताश्च्री ताथ तावा वाशाक तेश दशशात्र श्वाप्त हो साथ हो साथ हो वार्ष

मुष्यत्र मुषार्रयान्त्रहेष त्रपृः सूर्यकार्ये ट्यपृत्य ग्रीकार्श्य ग्रिकार्श्य त्राप्त न्यस्त्रितास्त्र्यं भेट्ट्यत्तु स्थान्त्रस्य मुण्यिति स्थान्त्रिकार्श्य स्थितारावाता मुष्य हूर्य ग्रीस्थित प्रस्ति । क्षांत्राधित प्रस्ति स्थान्त्रिक्त स्थान्त्रिक स्थानिक स्था

 এপ্স.এব্ৰু.ব্ৰথ.শ্ৰথা

र्भर

क्रेषयंदेळ५६ ।

उट्टिरज्ञेद्रार्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्य म्यान्त्रम् कुणचन्कुष्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम् वरिद्धेर जना वेद्र विवासून्य प्रदेशकून इसमा समा स्वास कर्ता है। विवास समा विवास समा समा समा समा समा समा समा सम

श्रम्हित्वेत् । रिश्रमेशनरह्यमेथेरश्चमेत्रभ्रमेश्वेषाम् । रिष्टेश्वरश्चिषम् ग्रीयान्त्रभावान्या

विषायित्यास्य रेर्यायिषाद्वेत्राकूर्यार्ट्र्यरा द्वियायर्था स्वायरा स्वायरा स्वायर्था

शूर्य जन्नानुमाकुर्यसुर्म्यामासेन्य है. यर्देव सम्प्रमामासी पायकवार्गा विषयपाकुर्यातिया

वर्ष्यात्रय्यदेवात्तुः क्षेत्रयाद्वात्रात्र्युः क्षेत्रयद्यात्वात्त्रयात्र्यव्यवा वर्ष्यात्रयः वी वित्रः

क्रीमक्रम्भीक्रियटर वार्यवास्त्रियद्वेत क्ष्रियक्षेत्र । विस्त्रीमान्त्रवास्त्र

चयुः द्रभारायहेब तथां चेष्ठेभारायहेब युट्ट्याङ्ग्रियः जैसर्ट्र्यायन्तरातायाचा ह्यायची राजायाचा

विट क्यां गुरुषायाचन्द्रमा पाटर्वा यह स्वयं स्वयं

रटात्राजावित्रा इषायवैद्यक्षेत्रस्त्रिक्षात्र्रक्ष्या इषायवैद्यक्षेत्रा हे.

ट्रमायविर्यानुनि न्व्रीमायवानु स्वास्त्र

इस.पर्वेट.पश्चेट.ट्यूस.ततु.क्री.शक्यी

५८भेंबे। क्यर्वार्यारवृत्येर ये यर केर्या चरे यत्यार्हेन योक्षेर विचये चवया से प्या

ब्रुट्र याचम्थातात्रुकागुट्र युक्कान्द्र द्वेकाका

भ्रैयःतर त्रव्यः त्युःस्य कूर्यायताक्रयायाय त्रव्यः तत्यया सरस्य स्थान्त्रयः त्रियः त वर्ष्ट्योवटबराह्य तर्ह्य द्वाराह्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्य देवा वर्ष्ट्

वर युर्ववर्षतात्रात्रयर बर्त्वर यत्त्रावर युर्वे श्वाचर युर्वे श्वाचित्र विद्ये हे त्राचर युर्वे भी मुस्ति षथराषुषात्रेक्रयद्वतास्यास्याष्ट्रया देत्राह्ययेत्रक्ययार्वेक्यक्त्रित्रक्ष्यक्ष्यक्ष्या वरमानेर मुझ मीतिर दूर्य मैंयार यमात्री मुझ राष्ट्री मूक्र यह यह यह यह समा विकास हर मा

ब्रायमकूष्यक्षीमानकुरमा वार्रे त्वकुरमायक्षेत्रात्वस्त्रीतिरकूरात्वकुरमान्त्रया राजमान्त्रस्य हिर्मातात्र्वर्मात्राच्यात्राच्यात्रान्त्रानुः स्टब्स्य स्वत्रानुस्य स्वत्यानुस्य स्वत्यानुस्य स्वति स्वति स्व

र्मारमायविर भ्रीर्मामा एमायविर समरमा स्वान्त्र मान्य स्वर त्राय प्रति स्वर् स्वर् नि क्तिंतर् हैटरी यर्टर प्रथमान्नेयतान्त्रेयत्तर्भ संस्था हैस्ये तर्मात्रेय विष्मु मुस्ति स्थितर् दिया मुन्नार्थनाञ्च व्यवनाञ्च प्रकृतम् । यद्भुर्द्धियः श्रायकृतः द्वेत्रकृतः यत्रः ग्रेट्रायम् स्वित्रक्ष्य प्रवित्र वक्तावर्यर क्रेर्यकर्म्वा अरद्गति द्वा स्थापर द्वा प्राप्त विष्य क्षेत्र विषय क्षेत्र विषय क्षेत्र विषय क्षेत्र

युक्ट युक्ट महिमाग्री यस्तर्री

वर्षविष्यम् वृश्यम्यायस्य मुन्यायानु एत्यानु विषया विषय मुन्यायान्य ।

न्वेषायम्भाषाम्बर्येन्गुर्न् देशस्त्रुत्वेष्ठरयास्मार्वेषावययण्यरदेशयरन्वेषयरस्य अवन् ट्रेलर मेर्याय देवातूर्य मुर्था वह शास्त्राम् द्वारा क्रिया क्रिया वस्त्रात्रा वर्षा त्रात्रात्र मात्रात्रा स्

कुट क्षिर जानधनराय क्षेत्राविष विषय सर ताषा याना विषय अपया याना विषय प्रति विषय विषय विषय विषय विषय

शुर्यरूर्रमार यक्ष्यणर देवर विषाकाराश्चार्यर । देक्षर ब दैवा ग्रेष प्रवृष्णिराय वृष्णिरा व्यर प्रार्ट्य दे

यक्षेर्यस्टिन्द्र देवे क्षेर वर्षे क्षे क्षेर वर्षे क्षे

मुत्रामान्त्रम् योवष् त्रांत्रम् तम् त्रविष्णमान्त्रम् हैयानह्त्यान्त्रानुह्नम् त्राप्ते हैयानह्त्यानुह्नम् व ब्रेट्र तर्र विट क्विन् क्री मुश्रमा या न्यून प्रायक्षित स्थित न्य प्रति विवास स्था स्था से विवास स्था से विवास

तक्रम्यूल्लाक्रमाईमायत्रारम्य्यम्यस्यन्त्रम् विषय्त्रम् वेषायास्य प्रतिस्यास्य क्रीता भ्रीता त्राहें में द्राया स्व हैं या वह्ना मीया स्व माया स्व व हरे प्राये हैं में हे भी दे भी व

वारट हेट रे ब्रैन ब्रथर्म शर्विट श्र क्रैंशव विषय हेट रे त्रक्तिरात् हेट हे क्रैं विवश्वरी ह्रिक्कर.

रूषा.ग्रीट । विश्वकाता रेट क्षेट इ. ब्रैट श्राप्तेवात्तर, विट क्षिय अभवार्य तर दूर, ग्रेवा क्षा वीवेट वायवा.

यापित्यमुर्थित्तप्रस्तात्राह्र्यतात्राह्र्यतात्राह्र्यत्रप्त्रित्यम् याद्रियायात्र्यत्राम् याद्रियायात्रेत्रत

रायुक्यायाम्बेरिया।

जर्ने क्षेर विशेष्य ता बर्न शक्का है किर कुष शामित तर पूर्व कुर्य है किर वि वा विश्व ता विश्व है कि

क्र.यदेव.बैंट.चश.कूंबे.ब्रैजो

क्र्*उद्*यु:ब्रैंट.चेशर्क्त्वीक्ष्ती

এপ্স.এ.প্ৰ. প্ৰস্থা कुष्ट्रमार्योष्ट्राच्युःशयः टवान्यायः वाराशास्त्रवाश्र्यूरः तर्वे येशवाः गेज्यं रेव्यूवा स्वाश्र्यूरः चर्षेष्रमामान्द्रमान्त्रेष्ठी हेर्डमानुसा उत्तर्भवार्यस्यमानुसार्द्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्र कूराजनायेरी कूरास्याराज्ञीर जनायेरी ज्ञीर स्याराज्ञातायेरी ज्ञिस्याराज्ञायेर अस्ताराज्ञायेर. तर्रायुं हुं में से के हो हिन कर हैं हुं के जनमा हिन कर हुं हुं के जनमा विकास हैं इ.४८८८७ मुच्यायाप्य प्रमास्या प्राकृताया स्वाया स्वया स संग्राम्ह्याराङ्गवर्षित्राश्चा दिलाराञ्चलियाकूणज्ञवाधरताश्ची २.५४१.५८८४४५५ कुउर्यायार्श्चर. बीदेव यंत्रद्रात्रम् बिक्वास्यादेन यादि एम द्रिट स्टूर श्रावाम्यात्र राष्ट्रय र द्र्यात्रेट यथारक्षेक्र स्ट्र तर्टा वकुत्र्वकुत्तर्वकुत्तर्वकुर्वाव्यकार्वाद्वयाम्बायकुर्वद्वःकुन्यम्यारःकृतवायाः उर्देर क्रांच में हैं हे दशक्र ग्रीट क्रांच न्या अध्याप श्राप्त यात्र नवशव वर्षा क्रांचे प्राप्त क्रांचे स्चीयार्ज्ञेर जावीयर तथी प्रयक्तरपुरायरे ज्ञायनायाय क्रियात्र क्रूया ये वा क्रुयां के अधिय क्रिया क्रिया क्रिया लाटस्यान्य स्वाद्यम् विषास्रायुक्तित्य स्वाद्यम् विष्युक्ति स्वाद्यम् विष्युक्ति स्वाद्यम् विष्युक्ति स्वाद्यम विभाजभात्रामार्थात्य दूर्य दूर्य दूर्य प्राचितात्र्या की भारत्य तिभाव भारत्य सैतावेशात र दिर श्रेमात्र्य सैट. स्योबः प्रजानान् राष्ट्री रमान्यान् स्वायन्यवायय रे हिर सिर्यान्य क्षेत्रा स्वायः स्वायः प्रजान यश्रक्रतार अविराज्यवराष्ट्रायर्थे । हिंसूयाश्रर तर अंत्रार श्रेश्वात वैरथ। रथक्र, रचरा र्वाश्वार र्चरक्रमण्चेर्द्रबर्ज्ज्वानिहरमञ्चिरया। र रेमक्रमयञ्चयम्बर्मयन् विद्यवन् विवर्गा र्तिवार्त्यट्टर्सिट्र्य्य्ट्टर्भायकुःकीत्रायत्त्रयः याजा तिवार्त्त्राट्टर्म्यटे ह्वायमवामायं मारकुत्यः तामा कूमातार प्रायत मिर प्रमायक्त मिरीट प्रमूच कुमात्रीय तामा मुमात्री हिमारी तामा मुमात्री हिमारी तामा मुमात्री ष्टर्म्स्वीयद्रयात्रेषद्धात्र्यद्विष्ट्रयाद्वेष्यद्वेषद्वयद्वेषद्वयद्वेषद्वेषद्वयद्वेषद्वयद्वेषद्वयद्वयद्वेषद्व

क्र.पट्टा.केंट.चश.क्र्य.क्र्वा वी रटजार्याचिरवाध्येषक्षेत्रवा रटवाचरा मधायरा वक्करमास्वाक्ष्यकरायायीयाः न्ने निष्यान्त्र प्राप्ति म्रियान्त्रे निष्यं कर ने मृत्या द्वाया कर्त्य के स्वाया विवासी रहा ुर्यमूर्यमान्यम्यन्यन्यन्त्रम् हूर्यस्य हूर्यस्य सम्बन्धमान्य वर्षात्रम् समा देन्य कूर्यन सैन्य वर्षात्रमः जानक्ष्मीवर्षः श्रुर्यात्रः त्रुमित्रः श्रुश्चाद्वात्र्यस्त्रित्ते विक्षात्रः स्त्रात्रत्वित्ति विक्षात्रः स् शक्रवीयत्तर राष्ट्र राष्ट् क्षेत्र हिमायम् वशक्रमास्याया सम्प्रेयद्रमामहत्र्म्मामास्यायामहत्रमायम्याग्रह वर्षुराष्ट्रवयाश्चाद्ववयार बाद्धेय वर्षाय द्वे बार्टिट कु वार्ड्डेट से टायर वार्डिश स्व से टायर बाद्धेय. क्षमा स्राक्ष सान्त्र ने देशा गीट कुर्र हु है है से स्थानकी र जना मेरिट असल र ट क्र पीन असला सुर तर र ट्राये. त्रुंद्राह्निर्देश्र्यायेष्यक्षायेषाये वित्रुंद्राह्निर्देशत्रात्ववात्रुं कुर्ध्या वर्धत्रथात्र्य्याये। श्रुक्त्र्यावृत्त्र्यत्यविश्यव्यक्ष्यः द्रन्त्रेत्रः व्यव्यायः व्यव्यायः विश्विती वंबर्ग्नुक्षेक्षेत्रेर्ट्वर्ष्वराष्ट्रिया ह्यात्रेर्ट्वर्षेत्रेर्ट्वर्ष्वरा ह्याविर् ष्ट्री कुर्यर्रत्युश्रह्यन्त्रेमाग्रीर्म्यवैराग्रेर्यात्रेष्याताश्चर्त्युत्रयविराम्बर्षा कूर्यासैयत्युत्यर. क्य क्षेत्र क्ष्य नुर्देश्य निर्देश निर्देश क्षेत्र हे स्टन्ट यर्गेन्य यात्री हे स्टन्ट यक्ष्य यात्र ८९१त्रक्तयमात्रमण्यात्रमण्यात्रम् द्रित्यम् द्रित्यम् द्रित्यम् द्रित्यम् वीत्रात्रवयात्रमण्यन् यान्त्रम् स् मे। क्रुमग्रीयमभारायम्बर्ग्यक्ष्रेन्द्रमुचारार्ड्समायर म्रेन्यक्षेत्र भ्राम्यम्बर्गा स्त्री वर् इंस्कोर्स क्रूपोनाजर चेन नर्सन येन क्रुप्तर्र मूच चोष्ट्र स्थ क्री शक्य मीन ततार हैंस. न्युप्त हैंस

तर्र्हेश्चरार्र्र्हेरित्रक्षिप्रमुद्रर्र्युत्र्युरच्यावन्ययन्तर्ता विच्चायक्ष्यानावन्ने हुर्मुनाचान्यान्या

वार्कुर्यम् क्रिवार्के हिन्दे न्यारेक क्रियार वार्ति दश्या विष्यार नाम्यार वार्ति सार निष्यार निष्या निष्यार निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या नि

এম:এ ग्रेयास्त्रिय दिक्र द्रियाक्ष संस्ट्रेया हैन की मुज्य विद्या स्त्रेय स्त्रेय स्त्रेय स्त्रेय स्त्रेय स्त्रेय स चयक्षितामाः क्षेत्रम्या क्षेत्रा कुर्या क्षेत्रम्य क्षेत्रम्य पह्रमाहेर्यम्बर्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यान्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास् क्ष्यं शह्यं तर हूंचीयतर अटवा कैया राष्ट्रकृतिहर क्रिंत देवी द्विर क्रिया वर्षा क्रिया हर्ष वर्षा क्रिया हर्य. जैमान्त्रम्थार्ड्स्यार्य्रह्मायह्वास्याम्भ्यात्र्येत्रस्यात्रम् शरथाक्षिराश्चीयां या मुद्देत्र द्वारा स्वारा हिंदि स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्व लट.चचर.चर्टेर.चमश्रात.चुन्यंश.चैरत्ये। चरेबाब्रीम.मरम.क्रैम.चर्चेम.तम.मरम.क्रीम.श्रुक्टातर. क्रीन्द्रम । द्रमानाश्वरमान्द्रम् अद्भूष्याना वाद्रमाना वाद्रमान वाद्रमाना वाद्रमाना वाद्रमाना वाद्रमान वाद्रमाना वाद्रमान वा चेवार यह नेव्यार्य नेया किरायर हेव राय हेवा यह वा स्थाय के या स्थाय वा स्थाय मार्ग वा स्थाय वा स्थाय वा स्थाय व ब्रिशन्तु भ्रिन् मुस्तरा स्त्रीय । विषय सूत्र देन में विषय सूत्र होन में विषय स्त्रिय में विषय स्त्रीय । विस् चर्मात्रूटमायरक्षेत्रः ह्य विमास्तर्भावात्राचित्रक्षेत्राक्ष्यायात्राचित्रम् ह्या क्ट्रियम्हिन्नेयर्रादेक्षियम्हिन्स्रेर्यद्वार्द्यर्रे देस्क्यायम् ग्रीवियरान्द्रायायम् प्राप्ता रेस्ट्यः बर्गाचिर वाष्ट्रम् वार्ष्ट्रम् बरा बिर मुच्चेर माध्या हरा मान्या क्राप्त के विष्य हरा स्थान क्राप्त के विष्य ह युरुष्ट्रताःक्रिताःशक्रुवीयक्षेत्रायवटःकेश्रिक्ट्रटा तिष्ठक्षेत्र्य्येववटताःक्षांश्वर्यात्रायह्वीतारःश्रह्रे त्त्रा विषय त्यात्रा क्या वा हुत्य महोवारा है स्व क्षेत्रा वृत्य क्षेत्र क् चर्टा क्रियास्रमाद्येन्द्रम् हेर्चक्यार्त्ययम् स्टेस्स्मिन्स्मिन्स्मिन्स्मिन्स् येवैटा इ.क्ट्रावताकुर्वनूषाग्रीट.हुन.श.इंड्रेट्यह्यताईट.त्वाताय्येताकुताकुवाशकुशाहरः र.र.

এম.এ.৪.চুড়াপ্র शक्र्यत्वेदा विक्रियंत्राक्षाक्ष्यत्वता विक्रियंत्र क्ष्यत्रहेत्र विक्रियोवासक्ष्यवेदा र्र्-रेज.वैक्ताशाश्राष्ट्राह्मरात्रा रिक्रि.x धनार्क्ट्रर प्रेय.विराशनारह्यतारा कि कैशायविद्यायात्रयात्रयात्रयात्रयात्र्यः प्रवायवित्र र टास्ट्रियः यहिशास्त्रयः यहात्रयात्रयात्रयात्रयात्रयात्रय यात्रा त्रोदित् × क्वायर्ग्वेत् × र्रायायेवित्रक्षेत्रेत्यात्ता विक्रमुक्षेत्रेत्यात्रा विदेशित् × क्वा वर्तुर× म्यार केर वर्दे क्षेत्रेन यद्र । विदेर केर यात्र केरिन यात्र । विदेर केरियात्र विदेश विदेश विदेश विदेश शुष्ट्र और तर्र चंग स्वारी । शिर तुन्त्र पुर्वा शुष्ट्र जाय तर्री । वर्ग्य तर्र हुन हेन्य तर स्वा । इनयः य. यमभारा हूर्यायार कुष्टी विषयोग्रेष या. सुरी वहीर वीग्री एकु हुमारा पर राष्ट्र योग्रेष अवीर कुष्टी यहे.कैंट्र मेक्ट्र नकी मुंग मेर्ट्र तर्र श्रय ट्या मेर्डिंट त्र के त्रिय के नश्चार प्राप्त मेरिंट तर्र श्रय ट्या क्षेत्रध्यम् ग्राटम् स्ट स्वामिषद्र द्रिस्य वायर् हेर् द्रेन क्रेन् द्रेन्द्रमाय मध्ये सम्बन्धः स्वामिष्ट र्वे द्विष्य राजूर्य इ. सम्मान्य राजिय त्रायु विषय विषय राज्य हुन राज्य हुन राज्य हुन राज्य हुन राज्य हुन राज्य वर् हेर् नर ने देश दशक्षांत्रेयो केर ने गोर रहेवी स्वयंशायित हेर्मिन र यर् । व्हिंग यर ने यंश्या वर्षायह्वाद्रेष.चे.मगोष्रा विष्यात्रतिरामय्त्रेष्ये दे.ह्वाकाक्रीर वर्षा विषयात्रक्ष्यंगीष हे.हेर.ह्वाय तर्मूला विजयर्ट्ट्रियाटकार्याटक्ष्मकात्रव्य द्राक्ष्याः विष्या विषयः प्रदृत्तित्रितः ग्रीटद्राय्वेषायक्षित्यक्षयः म्। विषायिषित्यात्रक्षेत्रत्रह्योध्यक्त्यायक्षित्रक्ष्यायक्ष्यक्ष्यायक्ष्यक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्या वारवात्त्रीर्द्धक्रेंदर्भावरता वक्षव्यात्रस्यात्रवाद्वेषात्रीद्द्ववात्त्रक्षेत्रवेषात्रक्षा देक्षेत्रयः रमाय्याक्यम्याच्या क्रमाय्याक्ष्याक्ष्या स्थायाक्ष्याक्ष्याच्या बर क्य जान्त्र् चयं नुष्य नक्ष्य नक्षिर व्यव्यक्षानाविषाक्षर । ह्वायन ने पर ह्या निर्माण विष्य र्ह्त्यमानुभाक्षेत्रायमाक्राक्क्वायम् वस्रअन्तरम् द्रियमानुभाक्षेत्रक्षक्षक्षात्रम् विकासम्बद्धाः विकासम्बद्धाः নপ্ন.এব্ৰুক্ত্ৰপ্ৰদাপ

वायहेब तालुब योशेंटका।

च्याचितः साद्यान्त्रेयात्रे व्याद्यात्राच्याः मुद्यान्त्रे विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः तरायकुत्रन्यम्बर्धरात्मम् द्रायाक्ष्यत्रम् द्रायाक्ष्यत्रम् स्वर्धम् स्वर्धम् स्वर्धम् स्वर्धम् स्वर्धम् वर्ष ट्यक्तर्टूर्यातीः स्टायम्भाराता क्रियक्यत्या विवायक्तायाम्भाराताः

क्रमातिष्यं यहोट हे ही त्य त्रकु य देव दार्र हिस्य ताया ही माने कुत्तर्त हैं हैं ते प्रमातिष्य प्राप्त हैं या

यक्ष्यंच्यात्रयं त्राप्रयायाया वैद्या विद्या क्ष्या विद्या क्ष्या विद्या विद्या

यक्तर्य। यक्कत्रास्त्रियस्त्रास्त्रान्ता द्वायमार्यनेट्यर्भीयमारम्यानमारम्बानार्यमानार्यमानार्यमानारम्

किथात्र वे निरक्षित्र यात्र के निर्मात्र कि निर्मात्र कि निर्मात्र किया कि निर्मात्र किया किया किया किया किया

चर्निगायमभाराय्टा श्रीयमार्ग्युद्रकृषाःश्रीयः संभवाक्र्याः त्रेत्रायम् सामानिष्याः पीतामः

क्री.शय.दैस्.चश<u>र्</u>ड्याक्ष्ता

व्यिषाता द्वी श्रव दैंग्ट नेषा हूँ वा क्षित्र थे।

जर्मार चेराक्षाय स्वेत्रेत्र यदे हैंच। यहेरा स्था

लट लट प्रथमश्रमाया है। यदु देंट विवर्ह्य

शुर्शेट तमान्य भेत्रे मह्त देशामक्ष्या सम्देश व समक्र द्वेशह देश निवा ग्रीन वट ने स्मूक्त

इंटा तराद्रभर्ते क्षेत्राचिक्टर्युत्रमायचेषाग्रीमाक्च्यद्रेट्टा यहेट्योषाद्गेश्वर्यः वेट्य निवाह्नी. क्यम्बर्धरम्भूत् यसम्बर्धयदेरद्यायर्वे रद्यस्मायमळेयदेद्दा यमयवस्य

ज्यूर त्युर हैयां यर्जना याना मान्युष्य बेट अस्त्रा की शासी स्थार हैं स्थार हैंस. नेश हूंया स्थान श्री वीशेर शत्युर.

त्यामाभीत्रवीमात्राचारमवीर्द्धवीमविषामान्युत्र्येष्ट्रेयम्यास्या नेमायाव्यास्य

कुरातरायक्ष्यम्। ४८.क्री.श४.श्रटरातायक्षे.व्रीय.८८.त्र्वर.क्री४.क्षे.व्येर.जीराजुररा

क्री. स्वायवाषयर द्यूरी देस अस्त्राक्वाय त्रुट्टी या इत्या क्री स्वाय है। चयत्त्रय। भीय क्रूट अभयत्य्य क्रीट्र्य में क्रुं म्याया क्रिये मारा निर्वादित क्रिया मारा निर्वादित क्रिया मारा

उर्चेश्र दीया राष्ट्र दार प्राप्टर दाया दिना विकानिया विकानिया विकास हिन्दा दाया स्थापित विकास हिन्दा हिन्दा विकास हिन्दा विकास हिन्दा हिनदा हिन्दा हिन्दा

देवाद्राचेरवायायव्यवायीद्रक्षाद्रवीया देवायाययव्यवाययसद्वीया

चर्षश्रक्षितात्राटा केया केया केया कार्य क्षेत्र केया व्यवस्था क्षेत्र केया क्षेत्र केया क्षेत्र केया क्षेत्र क उत्तर्ता चैयत्रक्रिया मार्चेत्राच्या हेत्या मिल्या मेर्चिया मिल्या मेर्चिया मिल्या मेर्चिया म द्रश्नर्शेष्ट्रवाद्युङ्गास्त्राद्ध्यास्य सूर्यास्यान्त्राद्धर् स्त्रियायस्त्रुद्धेर्यास्य स्त्रियायस्त्रियारः र्वूट्यत्राक्षेत्रर्भ्यत्राक्षात्रभवयावनक्षरःक्षेत्र्यः विष्या वक्षेत्रव्यान्त्रम्यान्त्रभ्या स्वाक्ष्मा होत्र देश्वार् में प्राप्ति विष्य होता है। यह या त्या के प्राप्ति विषय होता है। ट्रे.ब्रिश्मचीटर्ने.श्ची.पटका.पटर्यटरष्ट्रप्ट.तप्रका.ग्वी.इका.ब्रीयवूर्येट्यूकातमर्याच्यायप्रवर्षेत्रटर. श्रम्बोनमान्यत्र्येरत्रस्य। रेलारत्यम्भन्यत्र्यत्र्यत्यन्यत्यत्यन्यत्यन्यत्यात्रस्य टेशर्टेट अत्रूर हैं। जगरेग्रेयक्ष्य दूराविष्या मूर्ट श्वाविष्या मुर्ग होता वहेर विषय हेर स्वरहेत हैर. टिशाउट्टर विश्वासामी द्रास्त्रमा द्रास्त्रमा द्रास्त्रमा स्वाप्त्रमा स्वाप्त्र वर्ष्याम् । द्रिय्वेष्ट्रं प्रमुच्यायाय उर्दे । द्रियायाय द्रियायाय प्रमुच्यायाय । यरे.यर्व । क्रियमिशेटमा रेक्ष्र्यत्र प्रत्ये प्रत्ये में क्ष्यिय हैं हैं यमकेट विरक्षेर्यो के कि में हैं यम. क्रियमत्तर्वादार्यस्व मार्के में हैं स्वर्यम् में स्वर्या में स्वर्या में स्वर्या में स्वर्या में स्वर्या में तत्त्रक्रमें तर्द्वतंत्रेषे तर्द्वष्य कर्त्रम् त्राचेष कर्त्वा कर्त्रम् विषय कर्त्रम् र्टेट रह्म् ताम्रमिष्ट विद्यानि स्थानि स्थान स्तियुर्य कुट्रे शुर्य्ये त्यु स्वयं श्री द्राष्ट्र स्वयं श्री या व्ययं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स् ग्री. मेट्ट्र जाक्रायवेष रे जवर र वृष्ण श्रीयष अर्गुरु पश्च प्रवृत्य स्था स्था विकास स्था प्रवृत्य स्था स्था स

र्ट्र-द्वेरन्त्रद्वां वायत्वयद्वायद्वायद्वार्यक्ष्यव्यव्यक्त्र्यं क्षेत्रवाचवक्रिक्त्यः हेयाः

तथानुषा देशस्य द्वेद्र ताषाद्यचेशः द्वैद्र त्यषणतातात्त्यं ताषा कैर्याता विषात्त्र द्वाया ने व्याप्त द्वाया ने व्याप्त द्वाया ने व्याप्त द्वाया ने व्याप्त के व्याप्

मुल्यर-इत्यस्तिताताःश्रारत्याङ्गेश्रातात्त्रये ग्रीट-ईंबोत्यर्ह्त्याङ्गीर-वृत्तिता ट्रिट्य ट्रोगूस्ट-जुणोश. त्रुत्तायेथ प्रयःशःविश्वयो श्रोत्तश्रतः इंसूर्ये त्रह्यं त्रयः वैत्यत्र्वृत्तत्त्रः वृत्त्यः वृत्त्यः श्राद्यः जन्न व्यत्त्राविद्ये त्रात्त्रयं श्रोत्तश्रत्ये त्राद्ध्यं त्रह्यं त्रह्यं विष्णित्र्यं ग्रीट त्यः कृत्त्रः व

उत्याप्तकाम्बर स्टब्स्ट अन्यावकासास सम्बन्धान स्थाप्तकामा स्वाप्तकामा स्थाप्तकामा स्थापतकामा स्

<u> র</u>ী.পণ্ড.শ্রুন.পণ.র্ভূনা.প্র্ণিনা

वर्ष्ट्याय्र्ट्स्याययगद्रजात्त्रनः भ्रेषात्रा भ्रेषात्राय द्रायतीत् व्रीकृतत्त्र भ्रेषात् द्रायतीत् व्रीक्षाः लूटमार्थेह्वामाराष्ट्रे त्रिट्र द्यु त्य क्रूवामार्यर व्रित्र प्रत्या प्रवासके जूर्यर प्रपुर हैयो प्रह्मिय प्रथम प्राया मार्गे र प्रथम प्रया प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम तर्षात्रात्रात्रवातीर तार्युक्त्राचनमाता हुंस्ट्री ही यावनमाता हे सारी वीर्यात्राता हिर्या क्ष्रया द्वित्रया देवित्र । विक्रित्रया वाष्ट्रया वाष्ट्रया वाष्ट्रया वाष्ट्रया वाष्ट्रया वाष्ट्रया वाष्ट्रया र्याचनर्तिर विष्य श्रीनग्यमूर्यर याम्यस्य म्यान्य स्थानम् देय तवर मुख्या ह्या गीर हैया वर्षणा प्रयाप्त अधार क्षेत्र भी श्राय क्षेत्र गीर क्षेत्र हैया वर्षण क च्यु-हैबोनह्ना बन्यु-हैबोनह्ना वक्षन्यु-हैबोनह्ना बोध्य-हैबोनट्टन्यं न्यूप-हैबोनह्ना

रवाश्चर्दैवातर्टात्तर्द्वात्रहेवात्रहेता उर्ट्रत्युर्ट्यात्त्य्यावित्र्यावित्र्यहेवात्रहेतात्रहेवात्रहेतात्र्यांगः

र्टा क्षेत्राच्येत्र मुक्तिवार्क्ष्य स्वार् विवार्षेत्र विष्या विषय विषय स्वार्थिय विषय स्वार्थिय विषय स्वार्थिय स्वार्य स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार्थिय स्वार

र्शियोर्श्यक्ति क्रीन्वेयवेक्ष्यक्षियां स्वार्थक्षित्र स्वार्थक्षेत्र स्वार्थक्षेत्र स्वार्थक्ष त्रतार्थे। विश्वभार्यूट श्राद्धक्षर क्षेत्र क्षेत्र हैवा चर्चतार्शाट्य वर्वी र च सुर ग्रीट विच त्रायर हिर ग्री हैवा. वर्ष्याची प्रत्याविष स्वयं स्वयं यद्दा विषयाया प्रत्यत्ये प्रत्ये प्रवादिव स्वयं विषयाया व क्षुर्यद्यात्रे अन्तर्वात्रे विष्यात्रे विषयात्रे विषयात्रे विषयात्रे विषयात्रे विषयात्रे विषयात्रे विषयात्रे इ.संन्र.विरात्तरत्त्रे वाध्येष्ट्रराताषात्त्रुंत्रेर्ड्रन श्रीमार्गेर नेषायर्षेत्रवाद्यः त्रात्ये सूर्यात्रात् विरक्षेर मध्ये हैयोयर्स्याड्डीर यथभाराजाजभारुभाकुथ श्रूर हैयोयस्वायकीर यथभारार्रा वर्रेजाविष्टरात्रमा देशवर्रेवावर्ष्ट्यात्रेयात्रात्रार्वेवावर्ष्ट्यात्रेवात्र्येवात्रात्रम् तां ह्रायत्र श्रेर त्यु क्षेयता जीयत्तर वेयतार दे यूर्ट्र त्यु क्षेयता लट त्यर क्षेट अक्ष्मय. ब्रैंय प्रदेशकारी लिट लिट श्रव्यू रेशक रे विवीय प्रदेश क्रिया स्वेर प्रदेश स्वार प्रदेश स्वार स्वार स्वार स्वार ग्रीटाविताकुश्रासंश्रीहरी पटाम्प्रयाचित्रम्थायाज्ञीयान्त्रम्थायस्थान् हुरायायस्थायान्त्र प्रे.चे.ययर्, योप्रेशकाश्यरी ह्यूर.याष्ट्रशाक्ष्याविशवायवीर यकाची वर्त्र योप्रशकाशायर्थ व.य. वुवार्चित्यःश्रोवश्वत्तर्द्वत्वत्वेश्वर्षात्रह्रश्वत्त्वविवृद्धः वर्द्वविश्वश्रम् बर्द्ध्यःश्वरःचा चि.

है.श.य. बैट.चथ.कूंबे.क्वा

वासरावारा क्रियं से शक्ता वीर तार द्वार वीर । देतार प्रदूर क्रियं क्रियं क्रियं स्वार हें संदर्श हुँ संदर्श हु यट्टे र हैंचा यहरा विशेषा विशेष प्राथि। चवा यक्षा की क्रूर य हैंचा यहरा विश्व स्था पर्टर हैंचा यहरा. ब्रीस्वायस्त्रयटा व्यायक्षाम्भिद्धराययदेयस्यायस्यास्त्रयाद्यास्यायस्यास्त्रयाद्या षक्षः यथायिरशक्कः त्रकृतक्षायद्भातं व्यारायभागिरशक्कः द्वारायम् द्वारायभागिरशक्कः व्यारायभागिरशक्कः व्यारायभागि या देयदेयप्रस्थान्त्रेद्विति श्रीयदेयस्य हेर्द्यस्य हेर्द्रस्य महेर्द्रस्य स्थान चक्र-देव्यूर्यस्यातात्रदेश्वत्यूचरःसरदेवात्रःहैयांचर्द्यत्यदेव्यदेवदेवदेवदेवदेवदेवदेवदेवदेवदेवदेवस्य त्तृःस्वायःत्र्री त्वीत्रः तृत्रःस्वात्तर्भात्तात्रः तात्रत्रा द्रवायः देवावाद्यः भ्रीयः व्यक्तिः व क्ष्यकुरीकार्वीयःश्रायक्षर्रस्टर्दुरःहैवायहूकाःस्टक्षाःशेतूर्ट्स्युवियतायर्देःग्रेट्ग्रीःहैवायहूकाः लुष। ध्रेन ज़्या क्री त्रेट ज़ूराई वीटा हीय कर क्र्यूड्य में या प्रकार क्र्या प्राप्त हैं वा टर्जा क्र्रा था. लूट.श्रु.स्य.मुर् । क्रु.यर्ट क्रि.व्यिमायां रहेबा यहूमा मुक्या रहेबा यहूमा निका विका प्रति र व्या रहेबा यहूमा य्रिमारट्रेय.व्रेट्.ग्री.हूर संवेर व्हेटातावाची वयातक्षाक्षेर म्हाव क्रीस्ट दूर्व श्रीयाम्य श्राट्माना. षुवारानित्यक्र्याराज्यत्रवार्यात्रेयात्रक्ष्यात्रक्ष्यांव्यवावात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रा क्टार्ट्युरक्रियं यथाक्य द्राता ती. तथा ह्रात्मा अप्टार्ट्स्योबार्ट्युर क्षेत्र प्रताती वास्त्र स्वात्त्र स्वा ज्यूर नजरा वर नज्येश इर नज्ये देश है यह सेट निय हैंच स्थान निर्मेश होते हैं

देशयवुद्दे क्षेशयंते स्त्

विशेषाताहरायरीट हे.भ्रेषात्तराक्ष्ट्रेडी

वीर य दे क्रु. एक उत्तर वीर क्रिका राजवाका क्षेत्र : शक्य जीय में स्वर जा द्वा क्षेत्र क्रियां क्षेत्र : श्रेत्र क्षेत्र : स्वर क्षेत्र क्ष्य क्ष्य क्षेत्र क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

वेशयशयक्षा देख्यक्षेत्रम्यद्रा दबकेट्दा यशयद्यगद्रा

ट्याय बर्मा इस क्रियां में क्षिय क्षेत्र क

उर्दुक्र विट क्रूम रूटी इमार विट कु क्ष्रेट इस्क्रे दूर्य के बिय क्रूट मालय तालय ताम क्षेट इस्ट्र. ट्योर ब्रम्प द्रमार विट याचर विक्टर उस्ट योजमायभाष प्रमाद मार विट योगित मार्थ विद्या विच . এপ্স.অ.ব.কু.শ্ৰুপ

पूर्ययाः हूस्य रे द्रमायवैद्यायाषातात्रा हूमायायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रीय विष्णा पर हिंया यह यात्रीयः

शर्थ र क्षितायराशायातायात्रीयातायतीतायुर्य ताषुचातात्रात्रातात्रय योषय हिंचायहर्तात्रीराशाय र य.

विषामितिया देलार पर हेर ने पर्हें या देश रिष्ट ने मिन्न हेर ने परिष्ट हैं

विवास में मुस्ति र देवीया र र र र वा स्थाय कवास स्वास में स्थाय है र स्थाय है र स्थाय है र स्थाय है र स्थाय है

चिक्टरत्त्रेट मेजाय द्रातायर हुमा हैटय त्तु हुँचे ताय ताय। हुमूयर ट दंय ता यथा हीय.

श्रम्य नेमर्टा इत्रस्या वायम् सूर्यन्तेर इर्त्याम् स्वर्मे स्वर्मा स्वर्मे विभागान

রাপানহান নার্মারী ইন্ রুলইমার প্রতি ক্রিনরাপার্মপার রুপার নামর রুদ্ধান্ত প্রসার হিলা

ह्मामाग्री, द्रभाताच्रिमाश्रय क्रट त्रविताश्रद द्या हुंट द्रार्यूट त्यमामटमामीमाग्री क्र्यात्राद्र ह्या त्राप्त

चयर प्रदेश्य था ची र कूर्य । क्षेर हि क्ष्य पूर्या श्लेश ये । चीर क्ष्य भी अथया भी र जा श्लेष्ट । या श्लेष । य

चित्तर बेशत्तर्भुत्र्याक्रिशमान्त्र श्रार्त्तेयाशतर त्रहेष तार् हेर्नुर वाषर लेट हेर्नुर वार्शित वा

वर्षेत्राचि देवूला वर्षाकुः दुषात्राद्धे त्राचिवलयः विवायलयः त्राचाव्हः स्थावार्षेत्रा

*क्षेर. इ. कुच*र्रा किंट जा भें दावी वाकु वी शेर था।

वाश्चान्त्र्र्यं हेर्द्रम्यक्षेत्रेत् हेर्द्रम्यक्षेत्रेत् हेर्द्रम्यक्षेत्रेत्रेत्रेत्रेत्रेत्रेत्रेत्रेत्रे

|र्टामेर्ट्यरेपट्वासमा क्रियमर्याटसक्रियम्। |प्रविव मेर्ट्यर्यसमा |

*शु*त्रायायक्षेत्रेत्र नृत्यायायः कुत्रायाया

अभगडे.भ्रेगत्त्रक्रद्धा २८.तुरु। व्याचनम्बर्धा अभगडभ्रेट्रेट्यूबत्त्र्रःक्रिशक्त्या अभगडे.यभ्रेट्रेता

> ्रेंट्रसं देशका श्रीका नेट क्रिय क्षुत्रका अकूचा यभ्रीत त्य क्रूचीका यत्रे त्युर की त्रे श्रापकी यात्रकी चुर्य ता श्रुपं यां संस्था ने तेट क्ष्यिश्री इकार ने ट्रिय में तार देश ये चा क्षुत्रका यभ्रीत श्रीका

ताश्त्रसात्राक्षण्याः की त्यु ती एक्ष्या की स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

এপ্স.এ. প্রস্তু ক্রিপ

य.वीट.क्य.ग्री.अञ्चलता मुर्मेट देव्यितराल्य वार्थरण।

य। क्रीट्राट्याट्टा उद्यामा ट्राष्ट्रायक्ष्यामाम्ब्रायामामाम्बर्धानास्त्रमा चक्रमाचमास्त्रवाचित्रदेश्र्रमास्यक्षुरायन्त्रा कृत्रास्टर्यमाश्चीक्षेत्रमानेवाचीक्रमानेव्राप्तरा

वीर अवार्रेशर व्याप्त अव क्रिया क्षेत्र क्षेत्र कर स्वापक्षेत्र क्षेत्र क्

क्रियात्तृ क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य

पर्वेद्रःशरथःक्रेशःक्षेत्रात्रेशःस्रोशःस्रोशःस्याः चिरःक्ष्यःक्षेत्रात्रात्रःक्षेत्रःस्याः

ग्रीयाग्रद्धान्द्रस्य द्राय द्राय द्राय द्राय द्राय द्राय द्राय द्राय के विषय द्राय द्राय द्राय द्राय द्राय द्र

विक्रवीकात्रक्रदःक्रिश्रकीलारःविदक्षिवाग्रीक्षाकानूर्यःक्ष्येकान्त्रवाक्षाकानाकानाकानाकान्त्रवाभिक्षानिक्ष्ये

67

रेक्षभदेग्रेशुंदर्यतेस्वा

मित्रवाराक्ष्यवादे प्रमुद्ध प्रदेख्या है। सीयार्या के रूप्तेष भीषा हैर। वर्श्चिम् नादयावाणु प्रकेट यद्याद्यायह्यावा

यर्वायह्त्रक्षितामाग्रीद्राय्यं सैयमासीस्री शद्रवाश्रेष्रद्रातुः स्वाक्रम् ग्रीष्रं वशद्रह्मदाश *शुक्रेन क्षेन* यर क्रुविट क्रुव्यर्

ह्यायस्यायासुक्षायीशासुक्रकत्केत्यराक्षरा चीत्रभाष्ट्रियभाषद्गेयद्वर्यस्थात्रम् ८८ क्यायमामाम्बर्धानामामा

कुरात्तरात्रहेन्। ट्रेत्यर हुँट्रिय्ट्वायया मुश्रमस्य इसमाग्री ग्राह्म बट्रस्या विसयः मुर्थेलर्रे.यथभ्ये कर्ते स्थियरूर्वाययभभन्नर्रह्म तथा निसूर्ययभगरत्वास्र स्थ.

क्रुम्बा विश्ववास्त्रम्भेरदेशीयदेना दिनवानुस्त्रित्यायवायदेदिक्ता विश्वेतरायेष

ध्यर्ताक्ररी विभिन्नप्रत्र्रत्र्यभूष्ट्रम् विष्ट्रा विष्ट्र रियः विष्युष्य शर्ट्र तथा चैट क्वेच संभव भी चर्ष्ट्र बराय महा हित्य मार्ग मे मार्डिय संस्था विश

এপ্স.বাళ্ক্ত্রেপ্রথা षावद्रावषाययुर्योथ्याटःह्रे ट्रियुट्राय्याङ्ग्वात्रराद्यीरा विषार्युवायाचिरःक्वाग्रीयायाः वक्रीर दारुक्य कृष्य शावर ताथा तर विशेष वाक्षेत्र शाक्ष्य शावर वेषा विवाद विवा र्युष्ट्रिम् क्षय्युष्ट्रम् ब्रुन्य्युष्ट्रम् अन्ययुष्ट्रम् क्रुन्युष्ट्रम् च। यत्रा यत्रा तक्रमः हेम्पचलन्तर्भागीक्रुम्पद्रित् कुर्मेणुर्भेष्रेष्ठे स्वापः स्वाप्ते कुर्मेत्रः क्षेत्र दूर्य पर्वित्र ताराभार अत्या प्रथम स्वाचा नामा स्वाचा सम्माने स्वाचित्र प्राचित्र प्राचि वक्रिट्यम् अर्थेर वस्स्रम् देशगुर क्षेत्रम् रार्ट्स केर् ग्री वर्ग परे रायेर वर्ष हिर वर्ग है विश्वत्रयात्र मार्ट्स् द्रापर प्रवास्त्र मार्ट्स् स्वापास्य स्वापास्य स्वापास्य स्वापास्य स्वापास्य स्वापास्य र्येत्रहें द्वारा संस्ति। देर श्राज्ञ दृष्टे स्त्रिय व यावव यात्रहें या दूर स्वारा ह्वेय कर ही. इ.य.कुर्याति क्रिकूट ग्रीट्र इ.स.र. श्रुष्ट तार श्राष्ट्रव श्रुष्ट श्रीय तार स्था तर स्था प्रति हुर वार्वेट. र्वेष्ट्रियः याद्मार्यदेशः स्वाद्मार्थः स्वाद्मार्थः द्वात्राक्ष्यः विष्णात्रात्रः विष्णात्रः विष्णात्रः विष्ण स्रेट त्रु.के.शक्ट्र भ्रेष्ट्र भ्रेष्ट्र अपन्त्र स्वायक्ताकी स्वायक्ता विवयः उर्ने के देवायह्म विश्व के कर के सम्मेषा के कर के सम्मेष विश्व कर के सम्मेष च्युचिष्यः सैचष्यद्वतर्भव्यात्र्यं याः याः स्वार्द्ध्यव्यात्रे विद्यव्यात्रे विद्यायाः देत्यवत्र्रे व त्रुविर तेर्रात्राचनम्भूता वर्ष्य्रात्रवनम् स्वर्षात्राचनम् स्वर्षा हैवो यह्मा क्रीश शर्थ र त्युर एट स्थित त्याश्वरात्र शर्ध हैता त्युर हित्र प्रक्रिय त्युर हैवो त्याश सूर्याय. वाद्रश्रामीकाष्ट्रम्निटकारे विटाकियामी क्षेत्रकार्यक मुद्रम्भी यद्भी त्रामा है भी विषय चलमान्त्रीया चलमायायाञ्चलन्त्रीयायाच्या क्षेत्रकान्त्रमा व्यवसान्त्रनाचने चन्त्रपान्त्री केट केट क्रूर रा विश्वशासर । हैया यह यार ट विश्व होट क्रूर रा क्रूर है। रे यार

ब्रेट्टी तर्मेत्र्र में तर्में र जायवर ब दीन इंप्यानिक में हुंद्र है क्ये राष्ट्रीय जाविर के यस्त्र प्रात्त्री

चन.वोषटे.वोषथ त्योर: दुर्गूट .वीट: क्रूवोश:श्रेष्ठाटकट .वोशेटशो हुरू: इ.क्रुब <u>राष्ट्रीश ताथ वोषथ</u>.

विवाजकवामार्कत्वाम्यमार्थक्रममा देयमारत्वाम्यस्यायस्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्

नेपार यहर देखारा देखाय या स्वाया स्वाया हेन यह पार साधेन संदेश्वर संदेश राज्य स्व

र्ट्य विस्टी अधिर प्रक्रियायम् अधि देयम् विस्कृति क्रिया क्षेत्र विस्कृत

शुद्रुट च्यु र चा ब्युश्य अर्थ में न्या अर्थ प्रदेश ग्रीट क्यें र राजा अट द्रुर र चे र क्रिय में बार्थ र तारीका ट्यार्यनुकार्याटाक्र-रायात्राटार्य्य-यादेष्य-द्यायक्षय-प्राप्ताक्ष्यायक्षयाः देवकार्यः इंद्र में अध्या देखाया देव या अध्याय स्वयं स्वयं यह गीट र र र में ह्या ये या पहें र र र र र में ह्या ये या पहें शक्षा द्वानह्यक्राकुर्द्रन्यरामक्षा नेष्ठमणन्तरान्त्रम्यानक्षेत्रमण्यायः चेटवाश्रर्ट्युचेवातवराश्वथेथाय। वीत्राधुक्रवीवात्रराची वीत्राधुर्द्वराचराचे श्वेवादी विवर्गी मुम्मा क्ये वायम कर ताम्मा हुमा तामा हुमा ग्रीय मित्र री तमा प्रतिष्ठी शर.प्राह्म्यातात्राक्ष्यारम्यात्रम्यात्रम्यात्रह्म्याद्राह्म्याद्राह्म्याद्राह्म्यात्राह्म्यात्राह्यात्राह्या नत्र्रिक्षेत्रवारान्त्रिक्षाक्षेत्रवाराष्ट्रके वर्षा वर्षेत्रव्यक्षेत्रवा पर्वादे द्वात्रवारावर्षे विश्वर विद्यार देवा किये स्टा र जुर्च स्वास तर देवा किया है विद्या स्वास किया है विद्या स्वास किया है विद्या स रत्त्रीकुरदूर्द्धस्यातारद्धकुःस्याद्रःस्यात्रःस्याःकुष्ट्रात्त्रःस्याःकुष्ट्रात्रःस्यायःस्यायद्रकःस्य बार्डकार्यन्त्र्याःक्रियक्ष्यंत्रभारम् वायर त्राक्ष्यंत्र हरे यार्युक्षं क्य ट्रेश्यः चित्वविषयं यश्यरे त्र रहवाः रायुम्पायावराविवास्त्रेत्रप्रविवास्त्रता देन्यवेषर् स्टाचीव्यव्यास्त्रवास्त्रयावरास्त्रास्याः वातार श्रचत अर्द्धेवीय तर्दुर साक्षेत्राचि राज्ञेची यार्द्धेवीय रे. रे. वायर वार या स्रोत् भुषा अभवत्वयत्तर् संस्तुरतिवात्रास्यत्वात्त्रेत्रात्र्यास्य स्वत्यास्य स्यास्य स्वत्यास्य स्यत्य स्वत्यास्य स्यास्य स्यास्य स्वत्यास्य स्वत्यास्य स्वत्यास्य स्वत्यास्य स्वत्यास चिट्या विविश्वादीर क्रीय चिट्यायर विट्यायीय क्रीय क्रिया क्रियाय विविश्वात क्रिया क्रिया विविश्वात क्रिया विविश्वात क्रिया विविश्वात क्रिया विविश्वात क्रिया विविश्वात क्रिया क्रिया क्रिया विविश्वात क्रिया क्रिय क्रिया क लुष्री र्रमाय मुष्यमा २व १२६मा स्ट्रमा ग्रीट.प्रट.वी.श.वीटश.श्रट.त.प्र.वीश.त.चे.हैवी.ली श्रावीश्वती.दीर,ध्रेथ.त.प्रट.वी.श.वीश.तराउट. चेट्यानी देस्र अभगन्य सम्मान्द्रीय न्यान्य सम्मान्द्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय

এম শৃষ্টি ইন্ ই্রমা

त्रितःस्वापान्यमः स्वतिवेषायमास्रेनः यायामास्रमः स्वत्स्वरेतः स्वयाप्यमा विरोद्देन्याः स्वरा यक्रेच्युत्रस्थानीश्वर्यस्य। र्वायत्रयुष्ट्रमाम्बर्धानाः स्वर्यावस्युष्टा स्वायरः यथा तराक्षेत्र। द्रश्युक्षेत्राक्ष्येतावराच्चेत्। वोष्ट्रत्यवाद्येत्रात्रवादायेत्। स्वत्यावाद्येत्रः वर्षिय। ट्रेट्याम्,स्रेनशस्यरम्,रट्यांभ्रीट्र्यानुष्याभ्येशक्ट्रश्चराध्यात्रभान्त्रर्थान्त्र्या हेशद्रम्थियारायात्रेयानुस्य विश्वयानुद्रम् विश्वयानुद्रम् रहदेनुस्य अस्त्रेत्वेशस्य सम्भूटस्य क्कृत्यक्षियाम् अर्द्धन्ते। यन्त्रिकृष्णभाग्नेभा अर्युत्रक्ष्यभाग्यभा गर्षस्य स्टर्ग्यः रेपक्षित्। रत्याक्षक्षक्षेत्ररेपायतः र्क्षेत्राक्षित्वकु चकु स्वयं परिदेव स्पित्। रत्य र कृष्यं यक्षा ग्रीट शास्त्र मुन्ना ईवा विषया स्था सामा मुन्ना सामा स्था सामा सम्बन्धा स्था सामा सम्बन्धा समित्र समित कूटमासि-मास्यास्य भी सूर मार कूर संदुरमान स्विन विद्यास्य निरमास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व र द्येशार्थ्य र इशामान्तर शास्त्र रात्र अधिष भ्रिय श्रीय मेक्स स्मिर स्मिर स्मिर स्मिर स्मिर स्मिर स्मिर स्मिर

यवळ १८ द्वायह्य ळ १ से पंचयं वित्र ळ वसके ये दे रखा कुर यारा १ दुर ये दिव वि ब्रून त्रंद्रवर्षक्र क्षेत्र यक्षेत्र द्यावरक्ष्य क्ष्यंद्रतिया रटड्रेट्रेय दे क्रैट्र ज्यापाय यालव द्या चीलचन्द्रशाचेद्रायायायाववयाचारायाद्यातेषा क्षेत्रायाया वर्चा

ब्रैट्रेंड्र व्यया शर्य व्यवविषय्य राष्ट्र याष्ट्र याष अर्दिन्यरः त्राचन् गुन्दाव्याच्युरेनेदारम् षाय्यदेयात्यन्तु स्त्राः व्रित्रः क्रीयर्थे क्रेयरायात्राः

देवशद्वेवद्वक्षणया रहणेकेपद्वेद्ययाम्मक्ष्येवा रहणम्यद्यस्यद् क्वामान्यसन्तर्भन्तिमम्हित्यमहित्यीमम्हित्यान्तर्भन्ति वितर्भन्ति वितर्भन्ति कर वर्षान्यस्य मीराप्र

श्रमभन्ते.पश्चेत.ततु.स्वा

괴계

এপ্স.এ.বু.বুৰ.ট্ৰথ र्ग्र-तब्ह्यं क्रीयनभ्रीरयत्तवस्य १९८। क्र्यंट्रप्रथह्यं क्रीयनभेरयत्तवस्य स्वत्ये विका विश्वास्त्रम्य रत्वेक्कःरवश्रःस्यायत्त्रर्द्धनक्षेत्रम्यात्वर्यस्तुः वारश्येत्यरः वश्चित्रवा क्रु.यूर्यु.श्रायर्ट्र. द्रशाशाः अर्थाः वश्चरात्रवाः वश्चरत्त्रवाः वश्चरत्त्रवाः वश्चरत्त्रवाः वश्चरत्त्रवाः मुकार्ट्यानेकराश्रम्रियोमञ्चर्रययक्षार्द्यसम्बद्धार्यसम्बद्धार्यसम्बद्धार्यस्यम्बद्धार्यस्यमान्त्रस्य कुरानश्चरप्राक्षर द्वेष क्रेब्रक्स्यूद्धर्य रामश्चरप्राय संस्था स्था हो। रहेर बर क्षेत्र देश रहेत् विक्रिया. र्मामयम्दर् व वेवेवेक्ट्रम्पर्यः स्टाचीयाम्ब्रह्णयक्षेत्रम्पर्यः देववीयहः स्ट्रियः पश्चिरः जीवाजान्यस्याग्रीट.मेवान्यर्थेवानीरिया द्वेष म्हिरप्र प्रत्याद्वेष अक्षेत्र प्रति विषय स्वाप्त द्वेष मुक्ष प्रति । शास्त्रासान्त्रवः स्थानाकूट्रियान्तर्भात्रक्त्रात्त्रवेत्रकृतिन क्रीनान्त्ररात्ररः क्रास्त्रक्रेत्रकृति न्त्री हैबानर्जनाविषातात्र्वावात्रवावात्रवावात्रवाचात्रवा देखान्यात्रवा निष्यात्रवाचात्रवा निष्या रट जर्दे देवी जेवूर त्युर की अष्ट्र्यमान रायुर नियम निर्मेद त्युषे दे कुतार कुरुष्टा तार्य प्राप्त रायद्दे थे. चर्षात्रात्राक्षेत्रत्रात्राचेत्रात्राचेत्रात्रीत्रित्रत्रात्रेत्रत्रत्रत्रत्रत्रत्रत्रत्रत्रत्रत्र र्गोत् व देव मंद्रिक मंद्रिक स्क्रिय मुख्युर यथा देश व स्थाय स्थाय स्वराध्य स्वराध्य स्वराध्य स्वराध्य स्वराध्य इन्यानहा द्वानहाय व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था नित्र क्षान्य स्वत् । द्वान स्वत् व्यवस्था दे यादः सेकासः उत्र पदी द्रवायः वता सेद् 'ग्रीयदे या कृताय सेद्दि । वताय उत्र 'ग्रीयदे या उत्र स्थाप से उर्वेच । मुक्तमान्त्रये वृत्रम् ८ कुमान्यरे न्यताय द्विमान्यरे दिसान्यरे दिसान्यरे विकास हैन्नात्रमा पर्ट्र के प्रदेश पर्ट्र गिर पर्ट्र के र देवा पर्देश के प्रवासीय के प्रवासीय के प्रवासीय के प्रवासीय खुवार: ४८ व्रीय:वेट. क्षेत्राटी त्यार तार व्यक्तियातया विशयता स्ट्रीट हि. क्षेत्रा हे. क्षेत्रा क्षेत्र व्यक्तिया विद्याना सुरायत्रय स्थायत्र मित्र प्रतिविदः स्टिकीया देश्वर मित्र हो स्थायत्र स्टिकाया शरथःक्रिशःवेरःक्ष्रायात्रार्द्धाःक्ष्रायाक्षःवेयवैरःक्षेत्रःग्रेटःग्रेट्ये क्षेत्रःग्रेत्रः स्वत्याक्षेत्राक्षेत लुष्ट्रात्तर्य द्वारा निष्य विषयि द्वारा द्वारा विषयि विषयि । विषयि विषयि । विषयि विषयि । विषयि विषयि । गु.रैय। यहना स्वाय्य स्वयस योषाय गुरा युष्य यादा रूट याद्रेय गुरा यक्षीर वार्य द्वेय त्वर वोत्तर्रावरहेर्द्राच्याचनयाचित्रह्य राज्याचनयाचित्रह्य स्थान्यस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थ वराशायवानाम्याद्यानुषान्ता देन्वानीः अध्यास्य स्वर्भाग्यन्ति स्वर्भाग्यन्ति । सुर्यभार्यभेष्टभारास्य स्थात्रयाता दुव्ह्येयाय बार्च्यय्यात्रमाक्रीमाचेषायात्राचार्ययात्रात्रात्र विवाक्ष्रीयम् स्टर्मिन्य स्टर्मिन्य स्टर्मिन्य स्टर्मिन्य स्टर्मिन्य स्टर्मिन्य स्टर्मिन्य स्टर्मिन्य स्टर्मिन ८८.चेतायर.वुर.श्रीवर्षद्वटमिष्यतारवाश्रात्रात्रात्रात्रात्रश्रेष्टात्रस्य स्थात्रत्ये स्थात्रस्य स्थात्रस्य स नीयार्च मुन्द्रिया दे द्वार्त्रिये स्थाया मुन्द्रित्रे स्थाया मुन्द्रित्रे स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया विस्रवान्त्रम् महिनान्स्य पदेव परिवृषण्य परिवृत्ता विद्व दे द्वापुरिवृषण्य दे विद्वापित हे व

यहमार्यटाईमार्यहमात्रीःकै.वशमान्तर्यसम्बन्धाःस्ट्रां चनायर्यीर कुर्या विनायः कु.भ.रेटा इत्यातर्यीर कुर्या इत्यात्र्यीयारः प्रट्यामान्तेरी अभागान्य विभागान्त्रः हिंयाः ग्रीमार्थमाव्यात्राप्त्राय्येष अभागन्त्रात्रीःकै.हिंयात्राङ्ग्रह्मः भ्रामा विस्त्रेर विश्वमान्त्राः हिंया विस्त्रः भ्रापर्ट्रेर ग्रीटा हैयायर्जनात्रीःकै.हिंयात्राङ्ग्रह्मः भ्रामा विस्त्रेर व्याप्त्राप्तिः हिंरे पुः हैयायर्जना

श्रेश्वर,तमुर,तपुरक्ष्व।

क्र्यामान्नीद्भायान्त्राचित्रायराष्ट्रभावन्त्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्र ब्रे-कैजन्द्रत्योबीट.प्रयाञ्चशकःस्ट्रिक्षेट्रातूर्यत्। कैजासैकानीटःक्वित्रश्रमक्रयत्वशकःस्ट्रिक् चिवायत्र भारत्ये अञ्चल विवादित्य हो। क्रिंट पर्टेवाताया रशक्र क्राप्ट शास्त्र प्राप्त सेताय त्या

विष्या विषया विषया

र्वटःम्रम्भागीमार्द्धेद्धेर्त्सम्यर्गरम्बिवामा विमर्द्रा वहमामविम्द्रिः विग्राक्रम्रेया

केन नुष्युद्धान्य न्याया विवान साम नुस्रीष्ट्रा च्येषात्र प्रिया हेरे प्रसानेसन् वासुद्धा विस्ता कियतिशाशयाद्यात्रीयकी राज्याशिश्वात्री हैंदाई क्षेत्र द्वार्य स्वीता त्रायी ल्ट्रिय्त्वी विश्वशास्त्रे द्वार्यशासी अवस्त्रिय हिंदि स्वार्थर ग्वरा देवळव मुक्षमा उन व्यवस्था चर्ना चर्ना चर्ने प्रदेन ग्री ग्री ग्रमा चर्मिन विमा विमान तद्रद्रा क्ष्रें है। इत्यायममाम्बर्धायम्बर्ध्वद्रम्यमान्यक्षेत्रः र्ट्यक्रेट्रेन्याकीयविषावित्रम् वामान्यस्यायाः भ्रेषायाक्ट्रियाविक्ट्रियाविक्राक्षेत्रम् वर्त्वान्ता वृत्त्क्वार्गुः संस्थाः क्रियां क्रियां के निष्यां सिष्यां विलुष्या वैटःक्वामुन्ध्रममञ्जूदः द्वारः भैवमासंस्थानमञ्जूदि स्रेरः विशेषात्रदा क्रूबः सहिवाः

ट्रेथ्रिलटर्चात्रर्इ्चाथरारुअटशक्तिश्वेवायुवात्रातूर्यतायानुस्विधविधयीक्तरः सुर् मुलागुरायरवाकुवागुर्मिययर देखिन देव महिवायाच्या धुरा हे मुन्तुमायुर खुनाया छ। ग्रिट खेळाबा उन ग्राटबा खेट परिदेश मुन्य र बुबायबा देवा न खेळाबा उन ग्री देन हु

शर्थाक्षित्रभूतिम्प्रिस्ट देश्चर्टिशक्तिर यक्ष्ये ट्रिम्यताक्ष्यक्षित्रभ्यक्षितः चे.श्रम्यटे विट क्ष्यक्षेत्रभय

श.श.तायंत्रातान्त्रेति वेट.अश्वयान्निट.सेचयात्वरताक्रीयान्त्रच्यंत्रेत्र्यूर्ये रट्ट्र्ये साटाउचर

શ્રેશ્વન, ત્રાં કુંવા ग्रीटा श्रुष्टाराज्ञें होना अकूना त्राक्ती मिन्द्र होना होना प्रमायका दे हिन्द सेना विकास येश्रर्तरात्र्यस्था । देव क्रवं क्षार्था सक्र्या हिवाब दश्यहिव दुश्या । देश वार्थर श इ.चशश.२८.शक्ति.तश.वैट क्वाग्री*प्रशास*.५४ <u>त्र</u>कृत्रट्रीतूष श्रामीस्योशमाषेष मोट ज्ञार स्वीपश्चेश. कुंशह्मतर्यः याविष्टरात्ता रटः स्वाः क्याः ह्याः क्याः क्याः क्याः ह्याः ह्याः ह्याः ह्याः ह्याः ह्याः ह्याः ह यात्रम्थायम् कुं महिवार् देर्म्या रेट स्पर ह्याप्य महिवा महिवा महिवा स्था है र हेया देश हैया जारीयोश्वरमान्त्राकुःशहाजर्ते. ग्रेट्रेट्रेट्र्यूश्वराम्र प्रेयः श्रीवश्वरमाट्रमूष्ट्रियम् राप्तरपुन । वि. विश्वराष्ट्रीया रश्ची अधियादे प्रथम् यात्र मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार कुरात्रामेर्युका जैवानाबिरमा ६.वाबिरमा बूर्याबिरमा चर.क्यर.क्याकुका कि. यवाःस्वान्त्र्येव श्रीवन्त्रयान्त्र्यस्वारायान्त्रीत्। देत्यन्त्रस्वयस्वन्त्रस्वन्त्रस्यः विवायत्रात्त्रीः अन्नियन् मेर्ने स्वरं स्वायः स्वायः स्वयं स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्व यनगर्भात्रेत्र क्रेत्र सेट यन्दा द्यायनगर्भाग्येर कुःस्त्री क्रुटी सुट सर्दी सर्भेत देर्'बर्ही ह्युय'बर्हे'बेर'य'र्रेजायजार'द्रब'द्रब'युरुय्यक्ष्युदेष्द्रद्रर'र्श्वेयप्रदुवाग्रुटा देळें जाविरशः स्थानवार्ष्य त्राचीत्रव्यकात्रात्राच्यात्रे विष्या वायाने ह्वायनवार्षात्रात्रे विष्यारेशः तर देव्याये वर देव का देव शा र वा चर्च ये प्रति वा वा चर्च विषये वा वा वा चर्च विषये वा वा वा चर्च विषये वा वा शर्र्रर्भ अवस्त्रिश्चर् वरायक्षेत्रस्त्रिश्चर् शर्र्ष्यक्षयाचारायास्त्रियाचार भू-कि-अभागिताने विक्रियान्त्रक्र्य हिस्रिक्य वाद्राय त्राहुमान्त्रेय ने द्वायानीय । तार. उर्वायः चैषाक्रीः क्षेत्राचा विटः क्षेत्रक्रीः क्षेत्राच्यात्राच्या क्षेत्रक्रवाच्या क्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्या धेन गुरुष्ट्रश

शन्त्रेषे वेशक्षात्रात्रवे ज्ञायात्रवे भ्रीत्वे नियात्रक्षात्रक्षात्रवे क्षात्रवे क्षात्रवे क्षात्रवे क्षात्रव

तृष्यं य न मृत्रीं मृत्रा मित्रा मित्रा मित्रा मित्रा मित्र मित्र

रेक्षर य.चेट क्वाग्री **अभावे क्**टिंग्नचर तक्षर हुरुमक्रीय बैटवा हे भें रे क्वार

م) لت

रुष्मधरे क्षेत्रयरे स्ट्री

चर्षेत्रात्रक्ष्रभर् क्षेत्रक्ष्यत्रेष्ट्रवी क्ष्य्रियट्ट्यव्यवार्थेटवत्रात्रक्ष्यक्ष्यः

र्वेषायप्यविवनुष्यवयविदा अर्देरचङ्ग्रवा नेत्रमुष्यकेषप्येयुक्षेर्देदनुङ्ग्रद्ययेअदेवा चैललाईबानइकार्श्वेट नमान्नेट इवागिट श्रान्त्र्ट्र त्रम्येश्चेट बेलाउट्टे नामान्त्र में सुटलना हैन्र

शाम्रेष द्राप्तात्रय वेशवार्युक्य यद्भारत्ये कृति वी द्वाय द्वाय स्थायक्ष्य स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्था ग्रैट श्रायम् राप्ता अथवा स्वयं स

पुर रे. मूच उर्दूर क्रि. मुक्त का का का का की क्षेत्र कर किया के का क्षेत्र कर क्षेत्र का की का का

क्षेत्रयञ्ज्यप्रम्मेर्यम्भारम् क्षेत्रयस्य।

न्युस्ययपटन्नियदेष्ट्रस्ययम् ययास्यम् ८८.मूर्केय.य्यूम्स्य र्मूस्यातुर्भेशक्ष्य.

वायकारीयानाः स्वाकारायः प्रकारताः सम्बन्धा

द्ययविर-वेर-क्रिय:क्षेत्रकायाः मुख्याः चैकाः ग्रीर ।

ब्रेन्द्रिस्यम्डिन्यन्ब्रेनुबयबा

रेड़िर हेब यद्मेग हेवाब यदे व्यवस्थाय यदा

क्रमायद्यायहून। देयार अवस्ति विक्रित् भी स्वयत्यमान्य सम्मायहिन स्वयदिन यः

<u> </u>हुर्यायत्तुः स्वयः स्वयः स्वयः ह्रायः स्वयः स्वयः

श.च८.चटाशुरुक्षेत्रपष्ट्रप्रे.च.इपार्यवैटर्टर.चेट.मुष्टाकायुष्ट्रियाभीटरामार्थु ह्यां क्रम्यू क्र्यां क्रम्या

तारा ट्रेन्स्य क्रद्र द्रमार क्रियान क

लट.श्रेज्रह्म्यो ट्रे.ब्रिश.ग्रीश.इत्रेर्य.हेस्ट्र. चन्त्रपुर्यःक्षेत्रांत्र्वेषांस्वाश्वयः ह्येवा.क्ष्यः ह्ये

ক্রীপরেমারমপ্রয়ের বিষ্ণুরুর বুরুর বিষ্ণুরুর বিষ্ণুরুর বিষ্ণুরুর বিষ্ণুরুর বিষ্ণুরুর বিষ্ণুরুর বিষ্ণুরুর বিষ্ণুর বিষয়ের বিষয়ের

विवाधारात्री रटकवा वीकार के वाहीं या निवास निवास के वाही के वा

त्तवचर त्र क्षांत्रवीत्रमाश्चर्यूष्ट त्यम् स्वीयर त्र्यूर स्वत्यक्ट में र वर्श्वर संवत्स्व स्वत्य स्वत्य स्वत्

विवाओक्केन्यक्ष्मिवा व्यवस्वस्यस्यस्यस्यक्ष्मिक्षस्यस्यस्य स्वास्यस्य

देलराशवराविष्येषात्र यर्वा क्रेर्या सर्हे विषयि हे चार्य देशा खेव विषयि हे विषयि है विषयि है विषयि

वर्षेत्रम्यम् कुर्मवयावक्षाक्रम् देवहेष् यक्ष्मिणकेयलस्य विषयक्षम् यक्षित्रक्षिक्षेत्रम्

यक्षेत्री कृष्युप्रस्थात्रावाच्चयत्रश्रामारः शाचिरः ह्या शर्द्रमेर द्रव्यक्षेत्रकी कुर्वात्त्रवा यहवा.

हेन द्वा विक्तित्यहेन हें स्था छेत् गुर्म । देश के यद्वा मुख्य स्वा के छेत्। । देश के हें न

क्रूटशःक्षित्रःबुटःस्वयविवाःक्षेत्रः विवाःक्षितःग्रीशक्षेत्रेत्रःयद्वेष्वयद्वतःयद्वेष्वयःयविवा विवाः

विश्विद्धार्थित देव क्षेत्र वित्र वित्र

न्वियमे। नेक्षेन्यया न्यमेक्स्ययान्न्यस्यिर्देश्यान्नियम्

ग्रीट यर्ट वीयह्रें क्री रहूर वारेष रेश रह्में या क्षेत्र क्षे

क्रियामीर्थाराक्षेत्र व्यत्र ताक्ष्यतातात्वर्वा मुख्देष पास्त्र व्यवश्वास्त द्विषा देव्हिर वायावर्वाः वह्रम् र तह्रम् क्षरम् द्रमायनाय मुर्गे राष्ट्रयमायन निर्मे प्रमायन विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या तत्तर् श्रेष बं क्रियतर बोर्ट्र यर स्थातिमाय विषय वार्ष्याय हत्तर विषय प्राप्त विषय रायह्य. तर शुर्वेश है। यंत्रेयका विद्ध्यविषय स्त्रेयका वेशवर्षेट्र । देशवः विष्रयायक्षात्रम्यायद्वाक्षेत्रहेवायप्रदेशेषास्यवदेशेष्ठेत्वयक्षेत्रप्रदेशेषाः गैट,शुक्रुवीत्तर व्यवश्चेंद्र, ई. तार श्चर व्यवश्चेर तत्त्र व्यवश्चेत्रतात्र त्रवाचा श्वेतात्र व्यवश्चेत्र त्र ट्रेशप्रेट्रतर विविधारायान्त्रम् द्राप्रस्तिता। वयर्गानुषास्त्राच्चेत्र द्रोतेषार वर्षेत्रकेट कर्ते विवधाः क्रियाच्चेत्र परि:मेषा प्रवाहित प्रवाहित । मेषा प्रवाहित विकार विकार विकार विकार विकार विकार विकार व ग्रीम, मुष्रं त्रप्रस्वयम् सुर तर्तु विमानीस्मानः स्त्री उत्तमनिक्रमा निमानी स्वीमानी सुन मृत्यात्रायदाञ्चतमानेमाना चरान्तर द्वेषमञ्चलमाने विष्युत्र विष्युत्र निर्मात्र निर्मात रतताःश्रम्य तत्तवानाताः स्वीत्रीयः भीता रवान्तर्द्वानाः भीत्रम् वनानाः स्वानाः स्वानाः स्वानाः स्वानाः स्वानाः हूर्वामानुद्र। विसूर्वयभागानुमायमानुद्रात्वाच्या विभागविभाग्नेह्यायस्य विभाग २८। रेनजर्म ञ्चानमणीटा ग्रेम्ट्रिय देश्वर मोर्चना स्थार में में में में मार्चना स्थार में में में में में में त्यु कि जातू हु बे क्षेत्रु प्रत्य प्राचित । शरीय दे त्यार प्राच्या के विषय हु त्या की वा विषय । य्युत्र्य प्रथाक्रियार्ज्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या विषागुत्राहृत्यं व्यव्यान्यान्यः स्वत्युत्रेयाय्याया ्येट.क्यात.पंयान्यतात्रात्यात्रात्रात्रात्रात्रात्यात्रेय ट्राम्य दिया विविधाता व्यविधात्रात्रात्य यथा शावर जाह्याया

ष्ट्रीयक्र्या क्रियाचरेर्य्यम् म्राह्मा क्रियाचरेर्य्यम् स्वाह्मा स्वाह्मा

উ.ব.বৰ্মুপ্ন.২ বূল.নত্ত. ক্রী.পছ্ব।

प्याक्षित्र हे प्रदेशिषयेश प्रकृति हैं स्थान है स्थान में स्थान है स्थान स्थान है स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान इस प्रदेश भी त्यापि करे शाइया हुय हुस तर्य शहे इंत्रुची मी इस सी यचेट हे मूर्या है या देश भी र्देव यारेशर्रेव वे अवराष्ट्रमा मेर्देव रे मार्स्ट्रमावश्याप्टा ५८ र्देव वेर्देव रे अवराष्ट्रमा मे र्ट्रम् याक्षेयावस्य याचेत्। इस्र देशभी अर्ट्स्य स्वाप्तेवस्य प्राप्तेवस्य स्वाप्तेवस्य स्वाप्तेवस्य स्वाप्ति यक्ष्यराद्रभद्रेव क्री अर्द्रद्रा देणमामन्यराद्रअर्द्र क्षमाद्रद्रदेव क्री अर्द्र्णमा इटादेम ग्रीश्रद्वर्यूटमायद्दा, यसीयेट प्रमुमायम्याय श्रुवेमायमा द्रमूर्य ग्रीर्यूटमा वर्गेगचर क्रियाच र द्वेर श्रीम सेर यहेब महेर श्रावृष्ट्र मृत्ये हैं विश्व हिन्द्र श्राचर परेश हिन्द्र स्था परे ऐ.इ.च.क्य.प्रयानटिश्चर्यामञ्चामञ्जूष्यान्त्री.सुर्यमःद्रम् अपञ्चरः स्वानिकार्यस्य स्वानिकार्यस्य क्रुंग.क्षे.घर.श्रह्री दुंद्र.हंभ.सी.ह्यंचर्त्र्य.सटस.क्षेत्राचीस्वाजीस.वीहर्त्वाप्टेर्टा उत्त्वास.

व्यथान्तर्यानेष्यत्रम्यायान्तर्यस्ति निर्मात्त्रम्यान्त्रम्यम् विष्यम्

तामा हुन्द्रस्य सम्बद्धाना मान्या । द्विर्द्रवास्य सम्बद्धाना । दे

न्वागुर्देन्द्रेत्रन्त्रेत्यदेर्यायकष्ठममा नियमष्ठमभयम्बरयास्याचरयास्याचित्रम् स्रेम् विमन्त् शक्षेत्रकृत्विक्षेत्र्याण्यात् व्यक्ष्यक्ष्याक्ष्याक्ष्या देवायावर्ष्ट्रप्रस्यात्वे क्रियारी-तर्यात्रम्यायर प्रवीता विषायीयरणा र्यायः अवस्ति स्वार्यः स्वार्थः म्रिक्षणायकेत् चयककेत् यधिक्ष ब्रियः की व्याप्रत्यक्ष्यक्षाया देवीय स्वाप्तरा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स वामकास्रान्त्रप्रभाक्षवाक्रियाः स्ट्रान्टर स्वयः क्षेत्रप्रवाने देवायाः वामकास्य स्टर शर्ट्रहितमः ४८ श्रीवियत्तर्रः इसर्ग्यः ग्रीमाचीयत्तरे द्योपाचित्र तर्ह्यः अध्यमान्यायाचीय तर्ह्यः इस्रम्पिष्युं कीर्याचीयरा देर्याची रियम्द्री। यट किर्यास मुस्याद्वे महिर खारी स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त यवविश्वायात्र्यं त्रत्त्वेत्रत्त्वे व्यक्तियं द्वार्यं द्वार्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्य ज्वीरायभाष्ट्री ह्रेचात्रमासरायम्बामास्याद्भयात्रम्यान्त्रमात्रम्यान्त्रमात्रम्यमान्त्रमान्त्यमान्त्रमान्त् चैरयर्ट्रतत्त्रमा जयम्ब्रुयर्ट्रयम्बर्मम्ब्रूर्यायम्बर्म्यम्बर्म्यायम्बर्म्याः त्युव्यवस्थायवर्। विस्नेष्यत्रेयार्ट्स्वसाय्यवस्थायवर् विष्टसायायम् ह्रेस्केर् <u> </u>हुर्गायत्तर्यस्य व्यवस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वतः स्व श्चित्रवात्री क्री.मुष्यात्रात्रदेषात्रवात्त्रवित्तात्र्यः क्रीयस्य क्रीयादेषात्रवात्त्रवा द्वायायाः देव तर्त्रेज श्रुयर्ह्य । ४८.क्रैं तत्त्र द्रे तत्त्र तह्य क्रिंग क्रैंट द्रे वात ४८ वीक नव तार्य देव वर्ष. चैयः तः देव त्र मृत्यम् विद्याम् विद्याम व वर्ष्य न्या वर्ष्ट्वान्तेन देनवायमास्यानिवासम्बद्धिर स्ट्रिवासन्तेन स्वासन्त्रमास चहेन बरायनिवासकूरा देवत्याहेन प्रमुख्ये हिन हिन स्वाप्त हेन प्रमुख्य हिन्दित

क्षे.च.चक्ष्र्या.ट्यूश.तपु.क्री.शक्ष्यी

मृत्याश्वर पर्देश्व थे क्यर संजामानीर प्रदेश हुं हुं हुर हुर हुं योग तर माना में राजा थे। हुं र

्रिट् ह्र्योशत्रप्रज्ञचनश्रक्र्योत्तरः हेषं यस्त्राव्यश्रिट्रियायर् वाष्ट्रियायः वाष्ट्रपा

क्ष्यमानुब भाग्येव स्तृया

इ.च.बाध्य.ज.उच्च.क्र्जा

विक्रियसङ्गयमान्त्र याययेयक्र्यंत्री

चीट विचार्याचर प्रदेश क्रिंश इस्रथ खराय स्वर् कुपन्यम्बर्यस्य स्वत्येत्रम् सर्वेद्वित् र्श्वमाश्रयोत्र मान्द्र स्वार येन गुन्न विवास

देश्रयत्याक्रियद्गेयराद्ययायान्ववाया व्यानयान्यस्य। ट्रेन्सराचरावेचास्यायान्त्रीयाः ह्रेस्याविक्ट्यान्यस्य वित्रवयः

कूर्यायाग्रीयान्नेयान्त्रेयान्त्रीयान्त्रम् क्र्यायान्त्र प्रियायान्त्रम् क्रियान्त्रम् क्रियाः क्रियाः क्रिया ভাপারে প্রধান বিনাধার পার্থ পার্থ ক্রিন ক্রিন হ ক্রিকুপ ভাপার সংশ্রেক প্রধান সংশ্রিক প্রধান বিদ্যান্ত ब.च.क्ष्र-र्.क्षे.यत्रकायक्षेत्रक्षरायान्ता रवावात्वः यत्यवेषाक्षेकावीयात्वः रक्ष्रवाकावाधरः विवाः यशायर्यः त्राराचीयारायम। रटायुष्याचीमाय्येयाराय्ये दूर्मास्य स्टास्य स्टास्य स्वामायः ट्रे.क्वितायर्क्नेश्वराद्वात्राक्ष्यः रट.क्वित्वेव्र.चरत्वेव्र.क्वेट्.क्वेट्.क्वेस्तायर्वे व्याप्तवेद्वास्य

जारीय । रे.बार्ट्स् नाजायर बार्क्स् हुबायात्तुः क्षाय्य प्राचीत्र मुक्ता यर्वा स्त्रा बार्ष्य जायव्यः विष्या के शत्र द्वे त्राभा द्रभात्र भाषा वार्षेत्य त्राक्षेत्र वाष्ट्र द्वेषुद्ध दिने तार्ष्या सर्ट हिन्द वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र

এম.এ.ব্ৰ.ক্ৰম.ট্ৰমা रट्ट्रावश्चीयायदेगत्रशालट्राप्ट्राता ट्यूट्रेत्राक्षशाविश्वकूर्णामानुदेद्द्रायानुदे त्रक्षातान्त्रेषेष्राचित्रानाता तेषायुष्रायान्त्रियाक्क्यीयात्त्रःहेट्रेन्यः न्यत्वायानाताःसहूताः त्रर्ध्वर्ष्यं वृद्धव्यवस्त्र्यं युव्यवस्त्रेत्। युष्यक्षयाविष्ठवारे रेत्रव्यवागुर्द्धवः र्यशक्त्रः ग्रीयतात्रुप्री युर्तास्वीयात्राप्तियी युर्वरायर्थात्रीक्रूयायेषाक्रूयात्रयी यर्पर वह्रव मी रश्चामारायमान्द्रमान्द्रम्य मार्ट्स्य योगरा कृतः अत्याय स्था हेव वर्षेया योगरा कृतः त्युः श्रिम् देया देवा देवा विषयाविषया यहेव वषा यहेवा यय वाषविषया यहेव वषा यहिए व रट्रा विश्व म्युवाचवश्चेत्य न्येत्र व न्येवियित्त्र त्यु सहित्त स्था मुन्यः व। रिवेशह्र रेक्ट्रात्त्र दिशहर् जी मरिवास मिन्निस्त्र श्रिक्ट्रा श्रीवास स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व र्वेत्रम् श्रीत्रम् श्रीत्रम् स्थान्यम् स्यान्यम् स्थान्यम् स्यान्यम् स्थान्यम् स्यान्यम् स्थान्यम्यम् स्थान्यम् स्थान्यम् स्थान्यम् स्थान्यम् स्यान्यम् स्थान्यम् स्थान्यम् स्थान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्य विवार्यत्र म्रायाये विवास या विवास मान्य निवास निवास निवास निवास निवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास वर्षाक्रीर्येश्वीट्रेस्याच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या बर्भरियशहर्रियोत्तर्मुल्ये। वरिवालविष्टियसहर्म्स्ययोत्तर्म्ववात्तर्म्वावस्यस्र अविषाणिकायदीन्तुअह्द्यीक्षवेकायम्यायात्रवाकायमन्तुअह्द्यीचेमवेदा विम्मद्यीका ग्रीटर्ने त्रियाद्र क्षेत्र देशात्र क्षेत्र त्रीट्र में नियाद्र क्षेत्र क् חַפָּרִקָּיאַבָּק־קּיאָבָּק־פֿאַבָּק־פֿאַבָּן בֿאַרִים וְשַׁיִּאַנייַקּיּאַנּק־שָּׁאַישַרִּקּיָאָבָּק־שׁאַרָי देन। इ.स.व.तार हे क्रियर वीस्टर्मेन स्मियम विश्व स्थित है स्थान विश्व स्थान है की क्रिया स्थान है स् वः १८ रात्रः स्त्रः सामान्य ग्रीभामार्षेत् स्यापाटः मेटः स्टर्स्य स्त्रिम्स्रः स्मित्यामान्य विमामान्याने स्वी लुम खेम में मान के प्रति क्रम ग्रीटा में मूर्य र रहिम स्वरं मान में मिन स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स श्चिमाया हारायाचित्रम्भारा महाराज्याच्या प्रमाणका विष्य स्थाने स्

इवायानेत्। देरस्यान्त्रा ने देवित्यानुर्येत् केयायरायन्वायागुरम्पत्वायावीस्य साम्रीयः

तल्द्राचीयानुक्षा देख्यक्षाच्याक्ष्याचीयान्त्रिक्षाच्याक्ष्याचीयान्त्रिक्षाच्याक्ष्या

क्र-अविवायायनवारायया र्रोप्यायते मुन्नाराष्ट्रियाय मिन्नायाय मिन्नायाय है

र्क्र वीयत्त्रं विवाद्विषाण्यात् देस्र श्रेष्ठ त्र वादवाषाविक्रिवाषात्र याद्विषात्र श्रावीयद्विषा

क्रुथाचीश्राच्या चार्थ्यतात्राचेशातात्राचीश्रातात्राच्यातात्राच्यात्रच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात् मुन्ना क्रिया देव न्यान्धिन मुन्ति । भेरत्या स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति ।

प्रवक्तिम्मस्य स्वरं सर यत्वावारस्य स्वरं विषय स्वरं स्वरं विषय स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं इ.च.नथनम् द्रम् चीनकूचानामः क्ष्मच। ट्रेशकूचाः झेल्यम् नथन्त्रम् त्रीय वीन द्रमात्रम् जान्तर्वाश्वाद्धिः स्टर्भविता निष्यास्त्रे स्टर्मितः स्ट्रियः स्ट्

वेशत्तर तथेवोशत्त क्ष्यंत्राची विद्यात्रात्त वीर्यविष्ट्रविषात्रात्त तप्तेष वेशत्तरात्र क्षा रेत्। देत्विम् नुक्रियम्बस्य उत्रद्रास्य वीषान्वायाविक्रियाययायहेम् म्याक्रियाने प्रदेश खेशत्तर श्रीर प्रदेश प्रचेषीता द्वशताला विदेशका विदेशका स्वाहित क्रायुप्यानुवास्त्र स्थायमा स्रोत्।

ग्रटा देजायन्वान्त्रेयानु यन्ने वादाविवान्दियार्यम् अवर्षानु वावम्यान्य वायायार्यारे दिस्य र त्युषं मेर्राक्षर्रायदेवाक्षर्रायदेव वेशवाश्वरता वाक्षर्राया वाक्षर्राया युर्व वेशयाश्रुत्शयास्त्रीशयाद्भेत्रयदेयाद्मेत्रययास्त्री वेयनुपृत्रस्य सूरास्यायास रतिर तर अप स्वायारिर रक्षा तथारवाचा विकार सेर तीया श्राच्याचा यह विकासियार गावा र्वाला यर्र्स्वायास्क्रिया ह्रेवायास्य यत्रवाषाच्या वार्वाषाविद्र पर्द्वाषा त्रेत्यायहेबद्वियाम क्रेब्यावब्यायहेब्ब्ययमुद्दा रहार्द्वयव्यास्यास्य ट्यूमा ट्याया द्याया द्याया स्थाय श्रुव राष्ट्र र कि र्ट्याय वा स्त्र र चुनाया क्षायु विवाय स्वरण र दे खुवा बेठावा यहेव ववा यथ्येषात्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रात्रात्रात्रा तेषात्रास्त्रात्त्रीत्रेष्ट्रेय्येषास्त्रेत्रात्त्रेष्ट्रेय विषय ब्राचवाति.जाश्रेष्रातायपर्यात्राश्च्रह्मटायब्रान्टर्त्यूयः व्यवाति.जाल्लेकान्त्राक्ष्यान्त्रीयात्राक्ष्यां देहिरा. लर त्रथियोषात्र द्राष्ट्रित येषा स्वयो सिर्गुरूषा येषा सैता स्वर्त्य वीयात्र हें र त्या दे हिन्द हें र त्ये दे योवी ति श्रा लाया दे.क्षर.क्षर.य.क्षर.य.वीय.तर.यह्य.त्युःख्यात्येष्य.तीया.य.क्षय.त.त्युष्य.य. रितर्तानिर्त्ताने स्तिक्षेयार प्रत्वेश्वित्वयाने स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति राद्रार दे.चेर। ट्रेइशांक्ट्रिं मुक्स अध्येष ह्म दा बेर क्षा हरे स्वावाक देशहर हे र वा मुक्स अध्य विश्वास्त्रास्त्राचर्षुत्र्यारह्माया स्थायन् श्राम्चेना द्वास्त्राम् स्यान्त्राम् स्यान्त्राम् स्यान्त्राम् स चंत्रतयां ट्रेस्टर्घाक्ष्ट्रेट्रेस्टस्यट्रयादे यद्यायाचे । दक्ष्वयाद्वेवयदेष्ये वीवर्धे सैट वर्ट्र

क्ष.च.बाह्यस.वा.व्यंचा ५०

लट्श्रम्याव विद्वाशद्येवन्त्रेष्यं वीत्रमुः द्वेटन्त्रेट्रे सट्श्रम्वानायम् टक्ष्वाशद्येवनु वीतः तत्रम। ट.रट.युष्ये.बीस.बीटातत्रम। रट.युष्ये.बीस.बीटात्तु.ट.ट्र.टाग्वेषस। जीस. मुश्रमायिकातात्रायदेवतार द्रियर विद्रमायमायीय त्रायिक द्रियर द्रिय तर हेर क्रमायीय ह्रिय चयर्चेश्वरं स्वाप्तरं स्वाप्तरं स्वाप्तरं विष्याच्या देश कुरायत् विषयं स्वाप्तरं विषयं स्वाप्तरं विषयं *क्रे*न'गुर्न व:क्र्न**'न**'क्रुप्र'कुर्यन'ठ्यांग्रे'कुयव्यय'ठ:ग्रेनळ्ट्याचर्क्क्रयेन'नुपवर्ना न्येरः व। विराधानिक सम्बोधाना द्वार्यस्य स्वार्था स्वार्थी स्वार द्यानु युवाया व विद्यारित स्वीति व व्यापा व विद्या व विद्या विद्य चर्चिवायान्त्रभ्यं व्यास्त्रम् नास्त्रम् ट्रान्यम् याद्द्र्यायस्य स्वायक्ष्यं स्वायचेट प्रयापाट वार्चिवायः तक्ष्य क्षेट त्र क्ष्य हुत्र हुट टी यवाषूचा कूर्य क्ष्यां मार्की क्रयेमा क्री त्रयेमा क्री त्यां ववा व्यापा कर क्षय त्यां हुन र्वे। देवे छैर व क्ष्र पुर्येन यमचेन मेर्किन छैर । देव न समु सेन यमसेन मेरिके केन य धेव। <u> इ</u>यत्र वैद्युर्य त्रुत्रमायात्र क्षाय त्रयाय व्ययत्र व्ययत्त्र क्षाया क्षाया हिना व्यव्या हिना । कु.ने.प्रमू ।ने.कुम्भी कि.न.मु.ह्मा.जमाराचेम.चे.चने.ह्मा.कुर्यात्र प्रायक्ता.चना प्रमुख. वर्चनात्मभार्वित्वित्। हेब वर्चनात्त्रीत्र्यः स्टान्वियः क्षेत्रः स्वभारायः वाः क्षेत्रः स्वभार्यः हेव वर्चेतः कैंदर्यसार्थं कुर्रे देवचरत्र स्वामाग्रीमानु इंत्यूव्राद्धारी जमाद्यमाग्राद्धारा मानित करा हैर. त्रांचेवीत्र्ट्री ट्रेलटक्क्वीमानाविषात्रान्त्रेषात्रात्रेषात्रात्रेषात्रीमानाविषात्रात्रेषात्रात्रेषात्रात्र तात्राच्द्रेय येषात्राद्त्य श्रिबी दटा श्रीबी अवस्य प्रेम अवस्य प्रेम अवस्य देयः

ताथा.बिट्ट.चुब.चुला

क्ष.च.बाधेच.ज.यच्च छ्वा

यशास्त्रात्रीय क्षेत्राचीय व यशासी बीक्यी स्वार्थित व व्यव्य से स्वार्थित व व्यव्य से स्वार्थित व व्यव्य से स बे.मध्रार्थर त्रीर त्रीर त्राक्ष्यकाश्चार विषया वर्ष त्राक्षेत्र त्राक्षेत्र वीक्ष वीव थ तर्प त्राप्त स्थाप र

उर्मेराशुर्यः कुरा अभगत्रयः रहायुषि क्रीमावीययः अभगत्रयः महमायि मार्ग्यामाः

गुःभुविशारा देशवाक्रीयचराद्रेषायचीरद्रात् ररात्त्रुषायुक्तायद्रात्र्याक्रीयाव्या विक्रवारम् वर्षे व

क्षयत्रनित्राश्च्य्वास्त्रस्त्र

वर्षित्रत्रक्षेत्रपुर्यति तत्रार्ह्स्वरात्रुक्ष्र्यु

राध्येष योश्रम्स्य।

हेश्चेन स्मिर दूर यने श्चेन नु

र्नुत्वुवय्येन्वेत्ययम्ब्यायेन्।

कुरातरायक्षेत्र र क्षेत्रयक्ष्मिरायक्षेत्रयक्ष्मित्रयक्षेत्रयक्षेत्रयक्षेत्रयक्षेत्रयक्षेत्रयक्षेत्रयक्षेत्रयक

हूँट न निर्धेश निर्धा मुर्गा मुर्ग मुर्ग मुर्ग मुर्ग में प्रकर निर्धेश गुर्ग हो में में में प्राप्त स्वाद र देंदर इशक्क्षंत्र र दानुष्य क्षर तात्रीक्षर्वा कर्त्वा तीया श्री हित्र प्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश क्ष्य प्रदेश क्ष

च देव कुर प्रमेग प्रवेर रा क्रिंट रा प्रत्येष बीषात्रेर प्राचीरेष हैं वाषा रे खार नेष ग्राट.

ट्रे.च्रिश्य.चृत्वि.च्रियं.च्री.हेस्.टे.यर्वाजायर्टे र.सूर्ट.हेर्व क्री.जगायचेश.चे.श्रायकूवा.च र उर्वे र.च्यु.

्रेट्टत्तीयशानुष्य देट. येजात्तृत्रुब्य्तिवाधुशानुद्रिशानुत्रीयशानुब्यायत्र स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः वरःकरः वर् सुर रेर रेर विवस्त्ररे वूर्यारात्र्रे अधार विवास हिंव कुषार्यात्र आहे वांवाव्या.

इंट यहेन यहेगयह्म यहेन से ट्रा

क्षेत्रपुर्यिते राष्ट्र्येशरापुष्ट्यी

ब्रक्षांवेग रेश यहेँ ग्रेस यर छेग छर है।

यवे यस्य परे देश द्वा श्राप्ते स्वतं हो।

रेक्ट्रक्रेट्रिट्र स्ट्रिवायात्राचार्याः इयासेयातीयद्ये स्ट्रिट्या हेन्द्र याच्या । इयासेयात्राचीय ह्याह्म स्ट्रियात्राचीयात्र स्वास्त्र स्वास्त्र ।

विषायकायहेंस् रेयाट येश्ववी र्यायहें वी स्रोत या विषाक्रिया वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व

युरुक्र्यामतातान्त्रप्रेषं यम्हूयातमात्त्रम् नाथेयात्रस्म नीत्रप्रेष्ट्रम् स्वीत्त्रप्रेत्रम् सम्बद्धाः नाम्यम द्यातानित्यः हून्तात्र त्रिष्ठातित्वाक्षेत्राचान्त्रम् नाक्ष्यातात्रयातास्त्रम् नीत्रह्याः मेन्नः मेटा। यान्यम

वायरीत् वाश्वीरश्रायाणात्वर्ते वार्वोरश्याय हेता देख्य वित्व हेत्र विवाधी हेत् वरेत्याय हेता.

00

এপ্স.এ.ধু.শুখ,শুপা

वयत्तराहुत्रस्य व्याप्त्य राष्ट्रस्य देश हेत्र यद्या व्याप्त्रस्य व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्

शूटःशक्त्रयःतरद्यद्वायः वार्यस्य। द्यानमानु त्रेन्द्रायः वार्यस्य द्यान्यः वार्यस्य द्यान्यः व्याप्तस्य विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान

वजयक्र दियं क्रूट आत्रुयं स्तृ विट क्रूश

मन्त्रणट दूर यश्येर अवव सेया यहरा

हूँ रामा से सम्बद्धार समानि हूँ रामिता

क्रीट्रप्रयेशतीरतकर.यद्ध्या.जेशयी

शवर यह्यं संयथ यहूंचातर शुक्रीय सूर्

द्रभाजभाज्ञेष त्रप्रः साचीय तम्हूष देश में सूर्यः त्रुष्ट्रं अघव दर्म । क्रैर्यः द्रुष्ट्रं प्रचितः स्वाप्त्रं सूर्यः शघव सुजाय प्रत्यं प्रीरः । घजावर्षी प्रत्यं प्रयाप्त्रं स्वाप्त्यः सूर्यः प्रचव दर्म । क्रूर्यः त्र्यः त्रुष्यः स्वरः त्रवाश्चरः शघव दर्म । क्रूर्यः त्रवः

वर्षायायुवायायायहेव वर्षाहेरू यथा व हुन पुरोपायी हेव प्रयोगायी हेव प्रयोगायी ।

्रियः करं र र राष्ट्रियः मीयायायया र र स्वीयाया सियायायाया याव्ये र राम्यायाया याव्ये र राम्यायाया याद्ये वार्

युष्ट्रक्र्यकाराजायहेष येकार्ययेट देव्यात्त्रहीर। रहार या श्रामेष राव्या व्यापाय वार्ष्ट्र

जटशास्त्रियान्य याविष्यान्यम् वर्षान्त्य नृष्यान्त्रे स्ट्येषास्त्रे वर्षास्त्रे वर्षान्त्रस्य स्ट्रिय याविष्

विवायायहेब द्वारास्त्र प्रत्येव ग्रीय स्वाया साम्या भ्रीय प्रायत्वा स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया

ताश्रम् क्री. यट इंट्रेट्स श्राच्याता स्टर् क्रीया यट त्राविम क्रीया श्राचीय महेम क्रोचा कर्त्र वा शाक्या त्रा श्रवरक्षित्। रत्भित्रमाहेषयवित्वमात्रव्भियवित्रम्भववित्तमात्रव्भवत्त्रम्भवत्त्रम्भवत्त्रम्भवत्त्रम्भवत्त्रम्भव र्वेयत्तर्वियत्त्र्याचेरतम् तत्तर्भात्तर्भाषाचरकूर्ने शिषात्रर्वेशतम् वेशः केन् गुरमान्त्रव्यक्षेत्रयस्यक्ष्यप्रयन्तः वःद्वन्यस्य प्रेत्ग्युरस्यवेत्रग्रीयर्पेन्यस्येतः रारेन्द्रेन प्रवेत स्थे। न्रेस द्वारा स्वापारी प्रविधानि सेन्येन स्वेत्र स्वेत्र स्वेत्र स्विधानि स्विधानि स्व चवार्यक्रीत्रः त्युः तीवीवाताः तद्ये तात्रः श्रुत्रे ही हेय त्येत्रात्त्रयः प्युः हीता विवादाः य्ट्रेयःस्वाळ्ट्णुः अञ्चयः वृद्धेयः याः सेयांबेटा देय्यः स्वाः सञ्चयः स्वाः व्यवेशः याः कर् अवय केया न के बे व्यास्त्र में केया में महिला में में क्या महिला में किया महिला क्रमन्य मुक्तिकारीक कूरी हेक्रमतीवाकारीत न्यर्थ तराष्ट्रप हे ख्रिकारायुक्त्वी सुक्र वीक्षास्य स्वास्त्रस्य १८७ यहेब्यरकेट्रपरे मुन्नवाया हुरकेट्रया स्वयं यस्य स्वर्धिया स्वरं स्वर वर्त्रवात्त्रव्यः प्रति होत्र विषयप्य प्रति साम्बन्धि विषयप्य प्रति । विषय प्रवास्य विषय । नुक्षेत्रःहेत्रययुद्धः देवाषाययदेश्वषात्री ।क्षायत्रायायवयत्तवायक्षित्रयः होता ।केषः विष्यायात्रेत। देक्षरक्षायमधान्यत्यत्रेयायरक्षर्यात्रेयायात्रेयायात्रेयायात्रेयायात्रेयायात्रेयायात्रेयायात्र शवत्विष्ठात्राक्षत्राचलात्री श्रम्पाना वीरामहेर्द्धरात्रुर्दे में विष्णवास्त्राच्या

मिनिया वर्तता के द्वारामा के क्ष्या विषय कर ही में किये के सम्बन्ध के में में किया में में में में में में में ताय.ग्रेट्री पूर्ट.र्ह्यरचवातात्रका.कु.चवाचान्य.कुट्ट्री.यहूट्र.तवाक्चट.श्रवर.हेंस्री ग्रंथवा.क्श.

এম.এ.ব্ৰ.খুৰ,ট্ৰথ

वक्तरावः देवाबरायाः नुस्ति। स्वाबरावे कुवार्यः सुवाद्यः सुवाद्यः सुवाद्यः सुवाद्यः सुवाद्यः सुवाद्यः सुवाद्यः

ट्रे.लट्रा श्रीची.क्र्या.कथा चट्रय.तप्र.बीच.ह्री द्रेय.तप्रेयाल्य.तत्र.हीरा क्रय.द्रेयाल

वजारवीर में बेर्जूर अधिव यदे निर्म्

तायी रेत्यवेषरे १.१ई८.११र्य ई८.११४८१र्य वेश.मैं ४ ब्र्यामेर ११४८१ । ११६४.

यदेश रत्यवृष्य् कुशःहरूताया क्रियं येशः व्यवस्य स्वर्धाः शवय व्यवस्य स्वर्धाः

व्यास्त्रायानाम्बरमा वर्षणराहेत्रम्यूर्यप्रवृद्धिरायदा हेर्द्याहेत्रम्यूर्विद्योद्देव् नुप्यूर्वारम्याः

र्वेट ये कें टए क्रिया श्वापिय श्वाप्तीर वाशेर था।

ट्रशयक्षेत्रव्यवस्थायम्बुययम् मृत्यवस्य

यवे.त.एश.त.झेर वशःसैत.त.त.त.यभेग.तरः यरशास्त्री

देख्नर प्यसंग्रेग्डिं दस्यम्बुसंग्री।

चीरचे की प्रदेश को प्रमुख प्रचीय हैं चिया की प्रचा । राज्य प्राप्त हैं से प्रमुख प्रचीय हैं चया की प्रचा । चीर्ष र स्थाय प्रचीय हैं चीरा प्रमुख ।

१वेश राश प्रहेश है। दे स्थर खारा की मार्डिय इस या प्रश्ना की जाय द स्था हिंगा सुरा की सा

क्ट.क्ट्या.मेलर्टा ट्रेय.केट.वि.केट.ता.वायल.केट.तय.त्यायला.सी.क्ट्र्य.तवील.की.हूंट्यल.वि.सी. ह्योल.या चलता.वीट.की.ह्या.एल.जेल.ड्रेट.तपु.शक्तशल.सी.क्.पट्रुप.पत्रि.च.चक्टा पट्टर.

इसायहेवाश्वराताः वीवानायद्भायक्रयात्र्यात्रात्त्रयाः विश्वरात्त्रयाः हुत्यानीटात्त्रे स्थाताः यमाक्रः प्रवाचारिय वीत्रयेषात्रात्त्रियात्त्रीयात्त्रीयात्त्रियात्त्रे स्वयः निव्यत्त्रात्त्रयाः स्वात्त्रात्त

स्रमाक्त्यानक्षर्यात्म् हो। राज्यात्म्याक्ष्यात्रक्ष्यात्म्यात्रक्ष्यात्म्यात् ह्या यह्यः। यह्यः। यह्यः। यह्यः। यह्यः। यह्यः। यह्यः। यह्यः। यह्यः।

वर्षेत्राग्रीटश्रुट्रम्यतात्रवट्रताक्र्यात्त्रिट्रतात्र्र्य्यत्वीतास्थ्रत्यू ।ट्रम्यताः ह्यूत्व्यट्रत्र्यः

है. युरुत्रमूर्य स्वीत द्वाय वर्ष हैर्य वर्ष वर्ष हैरे विषय विषय होता नहित्र है है कि क्षेत्र कर भी है वर्ष वर्ष क्रिंद्रम्यानेर्यान्त्राक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याच्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् कैश्भीम्थितर यभगता वारमञ्जय विशेषित यस्त्रीयमार विशेषात्र प्राप्ति प्रमास्त्र प्रमास्त्र प्रमास्य प्रमास्य त्ये तर्ह्येटशक्ते त्राया की वार्कुत्र इस वायुक्ष की क्रम के दिवा वा की ता वा विकास की वा विकास की वा विकास की वःशर्राक्रीर क्रुंथ ताम्बेवाम्म्यूर प्रदेश याप्य वर्षाय वर्षाय वर्षाय वर्षाय वर्षाय वर्षाय वर्षाय वर्षाय वर्षा दुशताश्रद्धशत्राचेशत्रद्धवात्रविशतात्र्य। श्रवाकिट तस्रोटा व्रिके पश्चेर। विट वाश्वट. हुर। कुराविश्वरात्रक्षेत्रक्षवी.किर.वज्रीर.हेरबरश.किराक्री.बत्यत्वेत्वतुत्वरेष.त.वथर। <u>ह</u>ि कि. पश्चिर हं रशास्त्र स्वाक की का की क्षिय स्वाक स्वाक पश्चित हिंचा का की जाया था। द्रभाग्रीयाञ्चित्रप्रेत्रेत्रप्रत्रञ्चत्रप्र चित्रप्र चित्रप्र प्रमान्त्र प्रति । देल्यत्यहेन स्व विकेश्यम् स्व तथाश्चार्ह्स् ताधुवीत्त्रयेत्रार प्रेथाकी स्टाइटाइराजूत्वकी स्थार्ह्स् कुवाकी वीचवानी वि ट्टे.क्ट्.केल.कैट.टट.बेट.बेट.वेल.ट्री ह्या.याया.क्ष्याचीयायटा या.यावर.विसूच.वार्ध्य. वर्ह्र त्रिय ते. दे हे दिया विका विकास क्षेत्र कर वार केर क्षेत्र। वार जाता क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वार वार क्षेत्र कष्ण क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत यकारकारद्वे स्थात्राम्यिकामायकायेकाश्वराद्वे भूकामुद्दिराद्वेदायुद्दिरात्वेदायुद्दिरा तर.रट्युष.चेषत्र.श्रट्य.केष.ग्रीक्येत्रस्य तर्द्यातर अकूपचेषामे क्रीयर्द्यात्रस्य वर्षा

क्रांबाद्यायक्षेत्रप्रमासुर्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्याय य्रुषं त्रवीमा,ग्री,डूंट्यमा त्रभीर त्रीयोषा ग्रीट :रट :र :र स्थमा ग्रीय र :रूट :राष्ट्रभग वर्षेत्र :सैंव.

टेशयः द्वेद द्वशः ह्युवायायाय ह्युवाय राग्द्रश्रशाय तर्मूषा वोधयन्त्रियर्थश्रव्यत्र्यं यस्याम्यान्त्रय्यः विद्वायाः विद्वायः विद्वायः विद्वायः विद्वायः विद्वायः व

900 এপ্স.এ.ব্ৰ.মূখ मुन्नाचिरक्वमात्राक्षा विद्यात्रमात्रम् । विद्यात्रम् । विद्यात्रम् विद्यात्रम् । विद्यः त्तविष्टित्यम् यद्वे विष्टम् । विष्टित्यः विष्ट्यः विष्ट्यः विष्ट्यः विष्ट्यः विष्ट्यः विष्ट्यः विष्ट्यः विष्ट

रिमार्गिट स्ट्रिय त्रांत्र हूंस्यमार्सभीत्य। विट क्यांस्य त्रांत्र स्वाता वित्या है त्यांसार्थित वित्या है त्या

शुर क्षेत्रामा । त्या मृत्या मित्या । वित्यत्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्था । वित्या वीयः

चैरक्ष्यकुराक्ष्यकृति । दुरायशिरमा देशय यह वा दुराया क्षिय पर्वे वा क्ष्याया

मुक्कि विट कुक्क निम मुक्क नर्मिय देवूला विट विलट हुंट दुल त. सैयल दूर नर्मुख त. चैवांल ट्य.

चक्किरी स्थान्त्रम् क्किरक्षयाचा स्थानिक के क्किया मुक्ता मुक्ता होता स्थानिक स्थानिक

ब्रैंद्र जार्यकुष प्रचीम ब्राट क्रूंट . प्रथ ताधुचा ब्रोह्म विषय प्रथम मानुष्य क्रुंद्र रे क्षेत्र स्म राजी तथा राजा र जारा र

हेम या हिन्दी र या कुर्या या विवा कि स्वया गुर सह द द विवाय प्रेम वासुर वा ।

र्वाह्न्यः क्ष्यान्यः विषयः प्रत्यानीयः क्ष्यां क्ष्यः विषयः विषय यिंदरदूर्द्ध्याश्चर। इ.यर्श्चरयाश्चरात्रियात्रक्षवात्रा विषयत्रवाहूर्यावाह्मायावीटः वालकाराद्रेयकार्यः। वलवालाक्षिरासूबालाचिर्वालाम् दूषाकुलायक्ष्याताक्ष्यः क्ष्रीयः कूलासूबालाः

यट्रे क्रियः स्याप्ता विष्यः द्वाप्त क्ष्रिया स्थितः स्थाप्त स्थापत स्य स्थापत स्य स्थापत स्य

ट्रमूला ग्रेब.ब्रुट्ट.विट.तर.क्य.विट.क्व.ग्री.क्ष्मका.ग्रीक.ब्रुच.त्य.ब्रुच्यव.व.त.वर्ते.द्र्य.क्ष्य.क्ष्य.

रगर्रक्रमायान्ययायायान्यन्त्रम् वाक्टर्यन्त्रम् वायान्त्रम् विष्यायान्यम् विष्यायान्यम् विष्यायान्यम् विष्या

तर हुर्थ त्रकूट । श्वेतवातीमान् र्किर क्षेत्र प्रयाद्तुवृक्ष्यवाधुर क्षेत्र याट ग्रेट ग्रीट कूर्य । १०८८.

कुर्यर इर याद्यिय मेयदेवसम्पर्ध सुनासम् वर्ष मुन्तु हुन् मुन्तु सुनासम्बर्ध स्थापनि स्थापनि ।

्ह्रेवां झैनः सम्प्रान्तः स्ट्रान्तः क्षेत्रः निवान्त्रान्तः वाचान्त्रः स्ट्रान्तः वाचान्त्रः स्ट्रान्तः वाचान

यर प्रथम प्राप्ति । देन् वापत्र द्वियन् राधामार्थिवा स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व

रट.सूर्याजास्थायः इंतर्याजीयसूर्यात्त्रीयम् सूर्यः ययाविक्ष्याययययात्तरः श्रायक्षः यमः विद्यस्यः

यमभत्त्र वर्ष भैयमत्र्र्युर्भ भैयमत्र्युर्भ भैयमत्र्यात्र भ्रात्त्र भ्रात्त्र मियमत्र्यू पर्म दे द

व्यक्षात्राष्ट्रम् क्षेत्राचिवा चुर्मा व्यक्ष्य क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या व्यक्षात्र

त्युःशह्रद्रियः वीषायद्वेत्रः तत्त्रयो ट्रेक्ष्यः तत्त्रयो ट्रेक्ष्यः तत्त्रयो विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः र्धेशक्षेत्रयंदेर्यम्। हेन्ययः र्नेत्रम् नातेरः यत्निष्यः हेन्द्रीयायः हेन्द्रियः हेन्द्रीयायः हेन्द्रियः यत्र

वर्षेत्रात्त्रचन्त्रात्रधर्त्वेष्रात्रस्वाचीचीचीचे चुर्यात्तर्त्वे अस्तु विराधित

909

क्षायाभी स्वापानी स्वापान स्वा तर शक्त्री वेत्र्य क्री क्रियायमा हुट स्वायक्तर वार वार्यय क्रियाय वित्यत्य क्रियाय वित्यत्य क्रियाय क्रिय विट.तर ट्रिय्ताराकूट.तर कूटमारह्य हुड् उक्षर वी.वीर्यट क्रियक्षय तर वीर्यटमार्या मुम्नायसम्बेशनर स्मि.मुम्नायस्थायर द्यारिट र द्यायान्येर स्वार्यमान र व्रीयायर अभवः रीपुष्य रार्ट्प्रस्मे स्थितार प्रमार्थ्य क्षाय राजस्य स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय क्यं क्रियं नक्री स्थाना क्रियं क्री स्थाने स्था हे हे एक दशमी स्थान विषय स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ब्री.विर.तर.तूर्या तारश.सूर्यामा.चर् क्रीर.क्षेत्र.तमा.स्येय.तमा.स्येयमा.संस्वामा. इजन्द्रेर.कैर। कैच.क्र्यामा.क्र्रीर.कैर। चाल्य.क्र्यामा.केर.या लट.य.मर्थर.वालट. उर्देश चेलकासीयहूचीकानुरी चेलूखरी.यर्देशकूच विधाक्तियाकासीकुरूराक्र्याकारा ट्रेयुक्तिर:द्रुषात्मध्यम्वताय्तृर:कैर। क्रिंर्किर। चे.कैर्युख्यवायावायद्वाया विवाधर.

हेयययाष्ट्र केयथेत्। क्रुवामाध्रमः सैनमा रेतवा त्यममा क्री विष्यु र मान्यू समान स्क्रिवामाध्रमः

<u>कृषींभागी विरातर मूर्य क्षेत्रतार भूषा र्यूषा विराहेश्य हिंदी विरात कैरावेश श्रव रवी वर्षेय</u> मु.सैनगर्भर विषरम्भ विरागरमुर्भरायानभुर यदीक्रायानभुर रहिराश्रेय यार क्रायानभुर.

चर.चरात्रार्थेक्षा युर्यमेष्ट.कु.च.क्रैट.इं.कुष्यु.दूरु.ट्यीजार्यूवर.केज.शक्त्वारट.विटराउट.च. तायो क्रेट प्रेट स्थितशक्तरशत्त्रवायशत्त्रवायश्चरात्रवायश्चरात्र्यं स्था हे क्रियंत्रव चिश्रशत्त्रव्येत्

এপ্স.মান্ত্র্যুষ্ট্রপ্রা

107 त्रभानुन् भुग्नेत्रभान्यस्त भुन्द्रमा स्त्रेन स्त्रित्या स्त्रा स्त्रित् भुन्नेत्रभागात्र द्रात्य प्राप्त स्त्र

विश्वेत्रायायम्दायास्य स्थित्रायास्य विश्वे स्था 903 र्कुर्वायायक्षेत्रः पञ्चीत्रः यात्रता व्याक्षेत्रक्षेत्रः याः क्षेत्रक्षेत्रः याः क्षेत्रक्षेत्रः याः क्षेत्रका तूर्य कूर्यमाधुट : मुन्नु सिय स्टर : यह जीम वीस्था वीस्था ये सुमा वह सूर्याम : यह स र्ट्यर हुँच अहूच रहि स्वया सर की शार हूर सैंग येश क्र हुँद्र में हैर देव रहे हैं में हैर देव रहे हुँ । वासूगः वर्वनमःस्वमःसंवर्दरःसिन्द्रस्यान्त्रिन्द्रस्यान्त्रस्यः स्वर्द्धरःस्वमः वर्द्धद्वरःस्ववात्वस्त्रस्य क्षेत्र.द्यूर्य.ग्रीट.कूर्य । ब्रैक्टिंट्स.श्रह्या.चीसीश.याचेष.क्षेत्रा.ग्रीट.क्ष्ट.श्र.जश.व्रिट.जस.वैट.च. क्षेत्रयद्वरःक्षेत्रवृद्धः अह्वामा नवायद्वाराक्ष्यव्यव्यक्ष्यव्यक्ष्यव्यक्ष्यव्यक्ष्यव्यक्ष्य क्र्याया में हुन त्राया प्राप्त प्रमुश के त्रेमाया ट्रे.क्षेत्र त्राभक्ती वश्चित्रम्भावास्मात्रद्धात्रेट्र ग्रीट विट क्षेत्र स्रमात्री माटव यट्ये वास्मूस् त्वार्यस्त्रीरतर्याव्यात्र्यात्रेयायर्वात्रीय्याय्यात्रेयस्त्रीयस्त्रात्रेयस्त्रात्रेयस्त्रात्र्यस्य हे. श्रीयोवट, हे. हे तकट अक्ष्यं युर्हेट त्रार देशाया श्रीय बार स्वीद्य पर स्वीद्य के अ**क्ष्र्य ता यव**र. र्राक्ष्याकाः योवन्त्रात्रात्रात्रात्र्युर्देत्यं वास्त्रयव्यान्त्रिक्षय्यिक्ष्यात्रम् विषयान्या ५ र्याद्ररायावार्द्ध्रास्त्रक्षायद्र्द्रस्य वाचार्यत्यास्त्रम्याद्यस्य स्थास्य स्था वाटः विश्यन्ते स्वास्त्रस्य स्वाप्ते स्वास्त्रस्य स्वाप्ते विश्व श्वीत् स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्त गुमाह हैन ह्यामायकमार गुमायविष दे त्याप हुन हैंग है। यह र हुन हुन मा क्यायविष हिमाय चयःशर्ष्यं प्रविश्वश्नान्द्रा विस्थान् विस्थान्य । विस्व । तारीशामेशंशामेतायद्रात्रेयातात्री विश्वक्क् रचत्रविष्ठास्त्रीर्यर्द्धेरशह्रेरमेता विश्वक्र श्रेन्द्रियमायकुरेन्द्रययाम्भेष्ववायायायास्त्राह्द्। विष्टायायहेम्यास्त्रिम्याहेस्यस्त्रह्मा हि चनट.चेवोनार्थेय प्रचाराचरार्था विज्ञासका। विज्ञानार्यात्र प्रमुक्तात्रेय स्वेत स्वेत स्वेत विज्ञा

वासुम्रायायम्दायाम्यस्य द्वेषायामह्याची छात्रा

क्ष तारा, वाकुर, चुर, त्रीरा, वारा, तर्रा, क्रिया थ्री शकूर, त्राहूर, ग्रीरा, क्ष. तारा क्रिया वार्ष्य.

यहें अक्तर हो हो र राय के या रहे वा वह वा वह

दुशतूर्य ग्रीट त्युक्ति क्र्यक्रिय क्रिय क्रिय

श.वैशत्र र द्राप्ट्रांट्र शत्र वीट दे होवा क्रिय बी जाय द्राप्ट्र विश्व होता विद्या होता है।

गिट है। यप्तामीया वध्यात्राय वार्य हुर दा द्वार वारा हैया वधा वाष्ट्र वारा हैया वधा वाष्ट्र वारा हैया वह या

वशराश्चर जराश्चर व्यवज्ञात्त्र प्रकृषिय द्वाषा मान्य प्रकृषा है।

कुर्यातीयात्ये हार् क्षेत्र तीयोषा यहाँया त्राप्त हाराया हुर्या स्थाया वीत्या हो। या प्रथाया होया त्राप्त प्रथा

ग्री.सैश.श्रभग.धूस्रभ.त.रटा शार्षभ.तम.भ्रम.क्ष.क्र्य.स्त्रभृतःक्र्य.हर्रटा टट.क्ष्य.ता.

र्ह्न सर्व निर्माण राष्ट्र स्ट क्रियाश्चर क्षेत्र भी भी होये निर्माण स्वीतिक स्ट । स्वरं सर्व तर्ह्माण राष्ट्र

यहं द्वेथ देथ जीवाया विश्वाकी की आयर्तेता के हैं। विष्य वार्ता व्यवस्त्रा विषय अधिया स्वित्ती अध्यक्ष विष

वल्ला कै.ताम.वैट.व्यु.ध्रेष यत्रेताताम.वीट वेत्रीम.व्यूट्र प्राचीट विभावी क्या दे र प्राची कि.वार्ट विभावी क्या दे व

उत्वयन्त्रयान्त्रेष्यमान्त्रेष्यवयान्त्रवाष्ट्रम् यन्त्रयान्त्रम् सहित्रयान्त्रम् स्थान्त्रम्

त्रमा क्रिक्श इन न्युक्ष क्रियोक्त नर क्रिक्यमें क्रिक्ष क्रियान प्रियम क्रिक्ष क्रियो क्रिक्ष क्रियो क्रिक्ष

र्मायायराज्ञी विद्वायययायायाय्यायर हेर्ने र स्वार्ट हियायर हेर्ने र स्वायाययाय विद्याय

द्रर चहुन्। देव राक्के दीव क्षेत्र कार्या मी बोक्ट्र यय रात्र हुन स्वायनीय तर्त्व देख त्राय विषय शक्त्या या . मुशक्र्यक्रिंट ने यहुँ वायाय प्रमुद्धिय प्रक्या। ॥

घट चोसेट जम चेम मंद्री ॥

गुंबाक्षेत्रत्र राजन्द ब्रबाद्देशयाहेब एद्यावाबुद बायपदे वीं बर्वेपा

लूटशर्यह्रयः स्यात्रकुरावितिः वीक्षेट्रावित्यर्देशतात्रात्र्यः तथाविश्वतात्र विद्यात्रात्र्यः

शुष्ट्र व नाव हा जीवाहा.

क्षेत्राचास्रोहित्त्वायास्रास्त्रुर्यत्वे कुत्त्यस्य यात्रादेत्त्व त्वते द्वे विवासित्स्य यो स्वासित्यतः

गिदर्गीर.

यस्यानेद्वायर्पान्त्रात्त्र्येष्ट्वायन्त्रात्त्रेष्ट्वायन्त्रात्त्रेष्ट्

त्रभागभारमारमाररायर त्राय वीत श्राचत प्रवास क्रुप्र तर्वा श्रीत त्रायर विश्व क्रियर भागप्त वास्त्र व

त्तर्मेश्वर तर दूर्द्रश्वथायमा क्षाचीयतार विष्वित्तर्भात्त्र स्वायार दूर्वा स्वायार है। व्याया

तर.चेट.धूब.कुत

ता । एकानुम्याकार्ष्ट्र-स्वेदुःशहूर्-जार्ययः त्रक्त्यः सुम्या ॥ अविषा । जिस्त्याक्त्र्यः सुम्या ॥ अविषा । जिस्त्याक्त्र्यः सुम्याक्त्र्यः सुम्याक्त्रः । जिस्त्याक्त्रः । विस्त्याक्त्रः स्वित्याक्ष्यः सुम्यान्त्रः स्वतः सुप्तः । विस्त्याक्त्रः स्वाव्याक्ष्यः स्वतः सुप्तः । विस्त्याक्ष्यः स्वतः सुप्तः । विस्त्याक्ष्यः स्वतः सुप्तः । विस्त्याक्ष्यः स्वतः सुप्तः । विस्त्यः स्वतः सुप्तः । विस्त्यः स्वतः सुप्तः । विस्त्यः स्वतः सुप्तः स्वतः सुप्तः । विस्त्यः स्वतः सुप्तः । विस्त्यः स्वतः सुप्तः । विस्त्यः स्वतः स्वतः सुप्तः स्वतः सुप्तः स्वतः स्

ब्हा क्रि.शं.ह्ये स्र्य.ख्यु.वर्येट क्रुनाविषट प्रचाविष्ट क्रुये। वर्षेतार्थरायरे वर्षेट रचारावः येवायास्तर् वर्डेब्रयंदेखेम्बर्ग्ड्बर्यस्य न्यारम् गीय विचारी धूर्या क्षेत्रा मूर्या नयुर श्रम्बर्गा वर्षे वर्देव वर्षेत् ब्रुस्य वे दुइ से वित्तु प्रमायते मुक्ता प्रमाय स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स क्रुक्स्यमायसम्प्रमायवेषःयन् स्त्रुतः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः र्त्तेयमः नियाः द्वितामाः ग्रीः सद्यः स्थानः स भूटल.टेट.जूबो.तपु.इ.श्रुका.बूबो.बो.बोचीरी श.स्. चर्चर स्रिवासकः हुन् खर्चर व्यव्हा ८शास्त्रः क्षेत्रास्रकेषा मार्टेटः स्टानहेट स्त्रः खेटः। द्युव'क्रुंवायाटश'रेवे कुर् नु चह्र र कुर् ह्र्याबान्त्रवान्त्रम्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्या

मुँट उर्दु कुर्वाया चिषा स्रीवय वार्से र व्यक्तिया राषा

ग्रेन स्व स्वटक्र नर्र पुरिय के

यरे क्षेत्र वार्ष्य की पर्टेश सहस्य क्ष्य

चट. हुँच कुवारद्धर सुवाद्धर सुवाद्धर सुवाद्धर सुवाद्धर सुवाद्धर सुवाद्धर सुवाद्धर स्वाद्धर स्वाद्धर सुवाद्धर स वार्षण जावाल ब्राव्यक्षर जुवाय न्यान्य साहूर्य स्वाद्धर सुवाद्धर सुवाद्धर

শব্মদ্রুএ

900